

बड़ा कौन ?

लोग सच्चे मन से तो उसे ही बड़ा मानते हैं और उससे ही प्यार करते हैं जो नम्र और मधुर हो; अहंकारी मनुष्य से लोग दबते और डरते तो होंगे परंतु मन में उसे महान नहीं मानते होंगे। अतः मनुष्य की बड़ाई तो उसकी नम्रता और मधुरता पर निर्भर है। वास्तव में महान तो वह है जो दूसरों द्वारा अपनी प्रशंसा और बड़ाई की इच्छा नहीं रखता और उनसे प्रशंसा स्वीकार भी नहीं करता, क्योंकि वह जानता है कि इसे स्वीकार करने से उसकी तपस्या क्षीण हो जाती है, पुरुषार्थ में ढीलापन आने की संभावना रहती है और प्रारब्ध में कमी पड़ जाती है। इसलिए मान और मान्यता की इच्छा का भी त्याग करो। यदि कोई प्रशंसा करता भी है तो उससे अभिमान में मत आओ। हाँ, उससे आपको यह संतोष भले ही हो कि लोग मेरे व्यवहार और आचरण से संतुष्ट हैं।

शरीर मानो एक 'कार' है, आत्मा उसका ड्राइवर है। जो मनुष्य स्वयं को ड्राइवर (आत्मा) न मानकर कार (शरीर) मानता है, वह अहंकार करता है। ('अहं' का अर्थ है - 'मैं' और कार को यहाँ शरीर का वाचक माना गया है) यह अहंकार ही अज्ञानान्धकार है। अतः मनुष्य को चाहिये कि स्वयं को देह न मानकर 'आत्मा' निश्चय करे, तब उसका अंधकार मिट जायेगा। मनुष्य को

चाहिये कि नेतापन का अभिमान न करके, देवतापन का ध्यान करे, धन का अहंकार न करके धर्म का विचार करे, तन का तकब्बुर (घमंड) न करके सहनशीलता धारण करे तो उसे असीमित सुख-राशि मिलेगी, उसे नम्रता रूपी दैवी धन मिलेगा, उसे संतोष का एक बहुत बड़ा कोष मिलेगा।

सच तो यह है कि जो अपने-आप को बड़ा मानता है या अपनी बड़ाई अपने मुँह दूसरों को जतलाता है, उसे लोग ऊँचा नहीं मानते। सो तो है ही परंतु वह भगवान की दृष्टि में भी बड़ा नहीं है, न ही वह भविष्य में देवताओं के राज्य-भाग्य में बड़ा पद पाता है क्योंकि देवता तो नम्र और मधुर होते हैं। तो अगर किसी को सतयुगी, स्वर्गिक राज्य में छोटा ही पद प्राप्त करना हो और भगवान के दरबार में भी लज्जा से सिर नीचा करके खड़ा होने का विचार हो, वह चाहे तो अहंकार करे।

सुख-शांति के अभिलाषी को चाहिए कि वह अहंकार को छोड़े क्योंकि अहंकार से क्रोध पैदा होता है और क्रोध के वश हुए मनुष्य की निर्णय शक्ति एवं विचार-शक्ति नष्ट हो जाती है। अहंकारी मनुष्य में न ज्ञान टिक सकता है, न ही उसमें सद्गुणों की धारणा हो सकती है बल्कि उसमें जो थोड़े-बहुत गुण होते हैं, वे भी अहंकार के नीचे छिप जाते हैं। ❖

अमृत-सूची

- ◆ 'सत' रूपी तप (सम्पादकीय) . 4
- ◆ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के.. 6
- ◆ ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में.....8
- ◆ 'पत्र' संपादक के नाम11
- ◆ हाफ पार्टनर12
- ◆ बाबा मिला, सब कुछ मिला ..15
- ◆ अपना प्यारा मधुबन (कविता) 16
- ◆ सहनशक्ति.....17
- ◆ कैसे भूलूँ अहसान (कविता) .18
- ◆ क्रोध से छुटकारा..... 19
- ◆ नक्सलवादी से ईश्वरवादी ...20
- ◆ मीठी वाणी..... 21
- ◆ अहंकार से होता है पतन.....22
- ◆ सबसे बड़ा सर्जन.....23
- ◆ बाबा ने दिया स्वर्ग-सा सुख ..24
- ◆ नई सच्चाइयाँ25
- ◆ सबसे बड़ी शक्ति.....26
- ◆ शुक्रिया ज्ञानामृत (कविता) ..26
- ◆ तलाश पूरी हुई.....27
- ◆ राजयोग से असाध्य रोग पर..29
- ◆ सचित्र सेवा समाचार..... 30
- ◆ राजयोग ही कर्मयोग है.....32
- ◆ ज्ञान दान योजना.....33
- ◆ सचित्र सेवा समाचार..... 34

फार्म - 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन,
शान्तिवन, आबू रोड
(राजस्थान)-307510
2. प्रकाशनावधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता - उपरोक्त
4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता - उपरोक्त
5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता - उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय
मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा
घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी
एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण
सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

‘सत’ रूपी तप

भक्तिमार्ग के शास्त्रों में आख्यान आता है कि सती नाम की कन्या ने शिव को प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या की। कौन है यह सती और उसने कौन-सी कठोर तपस्या की? वास्तव में, शिव हैं विश्व रचयिता और सती है वो आत्मा जो अपने ‘सत’ पर अडिग है। कई बार कहानियों में सुनने में आता है कि अमुक व्यक्ति को उसके ‘सत’ से डिगाने वाली बहुत परिस्थितियाँ आईं पर वह अडिग रहा। तो सती भी अपने ‘सत’ पर अडिग रहने वाली आत्मा थी। ‘सत’ अर्थात् सत्य। सत्य पर अडिग रहने वाली ही सती है। प्रश्न उठता है कि यह सत्य क्या है? संसार का सबसे बड़ा सत्य है कि देह नश्वर है और आत्मा अविनाशी है। शरीर छूटने वाला है और आत्मा सदा रहने वाली है। तो निरंतर अपने सत्य आत्मस्वरूप में टिके रहना ही ‘सत’ पर अडिग रहना है। ऐसी आत्मा ही शिव का वरण कर विश्वकल्याण के कार्य में उनकी साथी, सहयोगी बन जाती है।

सच्ची सतीव्रता

भक्ति मार्ग में यह भी कहा जाता है कि निरंतर आत्म-रूप में टिकना या भगवान की मीठी स्मृति में रहना तलवार की धार पर चलने के समान

है। उपमा बड़ी सुन्दर है। लंबी-चौड़ी ज़मीन पर चलते समय पाँव के थोड़ा आगे या थोड़ा पीछे पड़ने पर किसी नुकसान की संभावना नहीं है परन्तु सूई की नोक से भी पतली तलवार की धार पर चलना पड़े तो कितनी सावधानी, कितनी एकाग्रता, कितनी लगन और कितनी सहनशीलता की आवश्यकता होगी! इसी प्रकार, लंबे चौड़े शरीर को देखना, याद करना, उसे पहचानना बहुत सरल है परन्तु अणु सदृश सूक्ष्म आत्मा को अनुभव करना, उसकी स्मृति में रहना, कर्म करते हुए भी आत्मा को देह से अलग महसूस करना, संसार में रहते हुए भी आत्मा के ही चिन्तन में रहना सचमुच अभ्यास द्वारा और वैराग्य द्वारा प्राप्त होने वाली साधना है। इस साधना को निरंतर करते रहना ही कठोर तप है। इस तप को न डिगने देने वाली आत्मा ही सती अर्थात् शिवप्रिया है, वही सच्ची सतीव्रता कहलाती है। सत्य आत्मिक स्वरूप के व्रत को हर स्थिति में निभाने के कारण ही वह शिव के दिल में स्थान पा लेती है।

‘अनहद नाद’ और

‘तुरीयावस्था’

सत्य आत्मिक स्थिति में टिके रहने का अर्थ है आत्मा पर चढ़ी

वस्तु, व्यक्ति, वैभव, देह आदि की स्मृति की जंक को उतार देना। ऐसी जंक उतरी हुई, स्वच्छ आत्मा को भगवान तुरन्त अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं। ऐसी आत्माओं के प्रति प्रभु को कशिश (खींच) होती है। स्वरूपस्थ आत्मा इस विशाल संसार में रहते भी मानो अपने अस्तित्व को बिन्दु में समेट कर, उस परमबिन्दु पर बलिहार हो जाती है। उसके गुणों का, परम कर्त्तव्यों का, उसके प्रेम का, उसकी शक्तियों का चिन्तन करते-करते भाव-विभोर हुई रहती है। उसके भीतर प्रभु-प्रेम का, उसके सान्निध्य से प्राप्त सुख का ऐसा झरना प्रवाहित होने लगता है जिसका प्रवाह कभी मन्द नहीं पड़ता और वह उस झरने से सारे संसार को शीतल करने के शुभ भावों में खोई रहती है। यह बहुत ऊँची स्थिति है जिसे भक्ति मार्ग में ‘अनहद नाद’, ‘तुरीयावस्था’ आदि नामों से जाना जाता है। अपनी स्मृति का पल्ला शिव से जोड़कर ऐसी आत्मा सर्व हदों से पार जाकर अनहद (बेहद) आनन्द का रसास्वादन करती रहती है। मन रूपी भौरा प्रभु-प्यार, प्रभु के गुणों के रस का पान करने में इतना रम जाता है कि उसकी सारी भटकन

समाप्त हो जाती है।

भीतर के नेत्र से उस परम सुन्दर प्रभु को निहारते-निहारते आत्मा में शिव के प्रति अटूट राग और नश्वर संसार के प्रति वैराग्य पैदा हो जाता है। जैसे हीरे को पाकर पत्थर को फेंकना सरल हो जाता है, इसी प्रकार परमप्रिय, परमकल्याणकारी, सुखों के सागर परमात्मा का प्यार, विश्वास और साथ पाकर आत्मा सर्व व्यर्थ स्मृतियों और कुसंस्कारों से मुक्त हो जाती है। आनन्दातिरेक में उसे यही अनुभूति रहती है कि शिव मेरा है, मैं शिव की हूँ और वो जो कहता है, वो मुझे करना ही है। उसके संकल्पों की पूर्ति ही मेरे जीवन का मकसद है

आत्मा ही करावनहार

एक तरफ, आज का संसार, क्षणिक आनन्द को पाने के लिए मारे-मारे भटकने वालों, अल्पकाल का आनन्द पाने के लिए कीमती धन, अमूल्य शरीर और बहुमूल्य समय की बलि चढ़ाने वालों से भरा पड़ा है तो दूसरी तरफ, आज के ही संसार में, आत्म-स्वरूप में टिकने का आनन्द और इस स्वरूप में टिककर शिव पिता में समाने का आनन्द निःशुल्क मिल रहा है। यह परमानन्द आठों पहर उपलब्ध है। यह प्रभु प्रदत्त सम्पत्ति, मानव की अपनी संपत्ति है।

प्रभु-पुत्र का प्रभु की संपत्ति पर अधिकार नहीं होगा तो किसका होगा? अतीन्द्रिय आनन्द प्रभु की धरोहर है और इन्द्रिय आनन्द रावण की। रावण की धरोहर अर्थात् इन्द्रियों के अल्पकाल के आनन्द के बंधन से तभी छूट सकते हैं जब भ्रुकुटि में विराजमान ज्योतिबिन्दु आत्मा को जानें और भीतर के नेत्र से उसे निहारते हुए हर पल उसके साथ गुज़ारें। अपने आप से अपनी बात कहने की यह आध्यात्मिक तकनीक सर्व तनावों, दुश्चिन्ताओं से मुक्त रहने का अविनाशी उपाय है। चलते-फिरते महसूस कीजिए कि अरबों, खरबों कोशिकाओं के मेल से बने शरीर रूपी ढाँचे को चलाने वाली मैं आध्यात्मिक ऊर्जा हूँ। पाँच तत्व तो अपने आप में जड़ हैं, इनमें गति कहाँ! पाँच तत्वों से बने इस ढाँचे को गति देने वाली मैं आत्मा ही तो हूँ। इस शरीर रूपी खिलौने की चेतन चाबी मैं आत्मा ही तो हूँ। मुझ आत्मा रूपी चाबी के लगते ही इसके अंग-अंग में स्फूर्ति, तेज और गति आ जाती है। मैं प्रकाशमान आत्मा, इस चमड़े के आवरण से ढकी हुई हूँ, दिखती नहीं हूँ पर मैं ही इसका चलावनहार और करावनहार हूँ।

पाना था सो पा लिया

यह शरीर तो मुझे कुछ दिन के



लिए उपहार में मिला है। मैं शाश्वत हूँ और यह नश्वर। मेरा और इसका साथ तो पलों का ही है, फिर तो मैं अगली यात्रा पर जाने वाली हूँ। मुझ आत्मा के पुण्य कमाने में यह शरीर सहयोगी है इसलिए इस आवरण को धारण किए हुए हूँ, नहीं तो मूल स्वरूप में मैं आत्मा आवरण-मुक्त और बंधनमुक्त हूँ। शरीर रूपी आवरण में रहते भी मैंने मन को इससे मुक्त रहने का अभ्यस्त बना लिया है। मैं जब चाहे तब ज्ञान-योग के पंखों पर सवार हो अपने असली धाम परमधाम में परमपिता परमात्मा की गोदी में अतीन्द्रिय आनन्द पाने के लिए उड़ान भर लेती हूँ। यही संगमयुगी जीवन में प्राप्त मेरा परमभाग्य है, इसी पर मुझे गर्व है। इसी से मैं परम संतुष्ट हूँ। अतीन्द्रिय आनन्द को पाकर ही मेरा मन गाता रहता है, 'पाना था सो पा लिया', अब इससे आगे और कुछ है भी नहीं और चाहिए भी नहीं।

— ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक



प्रश्न:- समर्पण होने का क्या अर्थ है?

उत्तर:- संसार में मेरा और कोई है ही नहीं। सरेन्डर उसे कहा जाता जो ज़रा भी न कहे, तन मेरा। यह सेवार्थ है। बाबा बहुत अच्छा संभाल रहा है, धन तो हाथ में होता ही नहीं है। फ़रिश्तों के पास पैसा नहीं होता। फ़रिश्तों को महल ज़ेवर नहीं चाहिए। व्हाइट, व्हाइट, लाइट-लाइट। देवताओं को तो महल भी हैं, ज़ेवर भी हैं, फ़रिश्तों को कुछ भी नहीं है। तो बाबा ने कहा, बच्चे, गे-गे भी नहीं बोलो। हाँ बाबा, हम ऐसा बनकर ही दिखायेंगे। बाबा कराने वाला करा रहा है, वन्डर तो यह है, खुद अशरीरी है, कभी शरीर धारण नहीं करता, हमको भी ऐसा बनाना चाहता है।

प्रश्न:- कानों के प्रति बाबा क्या सावधानी देता है?

उत्तर:- बाबा ने कई बार इशारा दिया है, बच्ची, तुम किसी की बातों के चक्कर में नहीं आना। कोई मुझे

सुनाये, मैं उसे सुनूँ या मैं कोई बात दूसरों को सुनाऊँ..ऐसी बातों के चक्कर में आना या दूसरों को लाना, यह ऊँच पद पाने वाले की निशानी नहीं है। मैंने किसकी बात किसी को सुनाई या सुनी यह भी कितना बड़ा विकर्म है। मनसा संकल्प में, वृत्ति में या वाणी में आये तो वो कौन है! वह बाबा के दिलतख़्त पर कभी नहीं चढ़ सकता।

प्रश्न:- बाबा रक्षा कब करता है?

उत्तर:- मैं सदा अपने अकाल तख़्त पर रहूँ। सबके प्रति शुभचिंतक रहूँ तो बाबा मेरी रक्षा करता है। हमारा हाथ भी क्यों हिले। टांगें भी क्यों हिलें। कोई सोचे, मेरी उम्र बड़ी हो रही है, पता नहीं कल मेरा क्या होगा, कहाँ जाऊँगी, कौन पूछेगा..यह भी फ़िक्र क्यों! बूढ़ी हो जाऊँगी तो कोई प्रबंध तो होना चाहिए ना..यह ख्याल त्यागी आत्मा को नहीं आ सकते। त्यागी कभी सेवा माँगता नहीं है, वह सदा सेवा करता रहता है।

प्रश्न:- दुनिया से साक्षी और बाबा के साथी बनके कैसे रहें?

उत्तर:- सबका योग दिलबर बाप से लगा रहे, यही भावना है। वो हमारा दिलबर भी है तो रहबर भी है। रहबर माना अच्छी राह पर ले जाने वाला। बाबा ने ऐसा रास्ता दिखाया है। हम तो चलते आ रहे हैं, दौड़ते भी आ रहे हैं, अभी उड़ने का टाइम आ गया है। उड़ती कला किसकी होगी? उड़ता पंछी क्या करता है? किसका सहारा नहीं पकड़ता है, एक डाली पर नहीं बैठता है। एक बाप मेरा साथी है, तो साक्षी होकर चलने के पंख आ जाते हैं, सहज है ना! बाबा मेरा साथी, ड्रामा में साक्षी होकर चलना, तो क्यों, क्या, कैसे समाप्त। क्यों, क्या वाले, वो फिर खुद भी रुक जाते हैं औरों को भी रोकते हैं। अभी समय है उड़ने का और दूसरे को उड़ने में वायब्रेशन से मदद करने का।

प्रश्न:- बेफ़िक्र कौन रहता है?

उत्तर:- वृत्ति से वायुमण्डल बनता है,

वायुमण्डल से वायुब्रेशन जाते हैं। मन के संकल्प से वृत्ति बनती है। प्रवृत्ति में रहते भी पर-वृत्ति हो। साक्षीद्रष्टा उपराम वृत्ति हो। कारोबार में हैं, यज्ञ सेवा में भले धन की सेवा करने वाले हैं पर राज्य पद कौन पायेंगे? जिसका पढ़ाई से प्यार है। बाबा जो दे रहा है, उसको दिल से समाने में अन्दर से बड़े चुस्त हैं। बाबा ने कहा, बेफिकर रहो, फ़खुर में रहो। बेफ़िक्र कौन रहेगा? जिसने बाबा को अपना बना लिया। जो बाबा को अपना नहीं बनाता है उसको फ़िक्र रहता है। जो फ़िक्र करते हैं, तो बाबा उनका क्यों ख्याल करे? वो खुद अपना ख्याल करते हैं ना। बाबा कहता, फ़खर में रहो। फ़खर कैसे रहेगा? जब अन्दर से भावना, विश्वास और निश्चय है। सच्ची भावना, अटल विश्वास, ड्रामा कल्याणकारी है, अच्छा ही होगा, गैरेन्टी है। बाबा में विश्वास है, कौन है, मेरा बाबा? मेरा बाबा कौन कहता है? मैं यह पूछती हूँ? आज का बच्चा भी बाबा कहेगा। पर मेरा बाबा कौन कहता है? जिसके दिल से मेरा बाबा निकलता है, मेरा बाबा कौन है? सर्वशक्तिमान है! वह चार प्रकार की शक्ति देता है, एक पुरुषार्थ में सदा ही सच्चे दिल से पुरुषार्थ करने में मस्त रहूँ। कोई भी कारण आ जाये, पुरुषार्थ में तेरा-मेरा न आ जाये।

दिल से सच्चा पुरुषार्थ करने की भावना है तो बाबा शक्ति बहुत देता है। फिर अपने बाबा के बच्चों से बहुत प्यार है कि बाबा जो आपने दिया है वो सभी को मिले, उसकी शक्ति फिर बाबा अलग देता है। तीसरी शक्ति देता है, हमारा सारा परिवार एक होकर रहे। सभी को देखें तो लगे, ये सब एक हैं, एक के हैं और एक हैं।

मुझे खुशी है कि सारे विश्व से भिन्न-भिन्न प्रकार की आत्मायें बाबा की बन गई हैं। सभी को लगता है, हम ब्राह्मण हैं, फरिश्ता बनने वाले हैं। तो इसकी भी शक्ति मिलती है। बाबा, विश्व की सेवा करने का अलग बल देता है। हम त्यागी हैं, तपस्वी हैं, सेवाधारी हैं। त्याग से भाग्य अलग मिलेगा, तपस्या से बल मिलेगा, सेवाधारी से फल मिलेगा।

प्रश्न:- नेगेटिव ख्याल कब आते हैं?

उत्तर:- आजकल मनुष्यों में भारीपन बहुत है, तन से भी भारी, मन से भी भारी, धन है तो भी भारी, नहीं है तो भी भारी। हमें तो हल्का बनना है, चिंता नहीं करनी है, फ़िक्र नहीं करना, कोई बात का दुःख नहीं करना है। कोई कामना नहीं रखनी है पर अच्छी भावना रखनी है। जितनी अच्छी भावना रखते हैं तो भगवान हमारे ऊपर राज़ी हो जाता है। फिर जो सेवा अर्थ संकल्प करेंगे वह पूरा

कर देगा। तुम पुरुषार्थ अच्छा करो। पुरुषार्थ में वेस्ट थाट नॉट एलाउ, नेगेटिव प्वाइज़न है, पॉजिटिव अमृत है। बॉडी कान्सेस हैं तो निगेटिव ख्याल आयेगा। सोल कान्सेस हूँ, आत्मा हूँ तो परमात्मा की हूँ। भगवान कभी नहीं कहता, तुम मेरी नहीं हो। मैं तेरी हूँ, तू मेरा है। तो मैं भी वायदा करूँ ना। मैं भी कहूँ, तेरे सिवाए मेरा कोई नहीं। उसने हमें सुख, शान्ति, आनंद, प्रेम में सम्पन्न बना दिया, कोई कमी नहीं है। जब अन्दर प्युरिटी है, शुद्धि, सच्चाई है तो परमात्मा से डीप संबंध हो जाता है। फिर सबके साथ वफादारी, ईमानदारी से चलना है। दुनिया में कहाँ भी जाओ हर इंसान में प्युरिटी और आनेस्टी की कमी है। जहाँ भी जाओ, धोखा ही मिलता है। हर एक ने कहाँ न कहाँ से धोखा खाया है या किसको धोखा दिया है। वह बिचारा सुखी कैसे रह सकता है। परमात्मा बाप हमको शिक्षा देकरके, धोखेबाज दुनिया से किनारा कराकर, समझदार बनाकर डिटैच और लविंग बनाता है। पहले डिटैच फिर मेरी नेचर लविंग हो जाए। ऐसी लविंग बन जाए जो दूसरे का कनेक्शन भी परमात्मा से जुट जाए। वह भी संसार से डिटैच और परमात्मा से लविंग बन जाएं। ❖

ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में परिवर्तन की चुनौती

● ब्रह्माकुमार रमेश शाह, मुंबई (गामदेवी)

संसार शब्द संस्कृत भाषा से बना है और इसका अर्थ है 'सरति इति' अर्थात् जो सदा प्रवाहित रहता है उसे संसार कहते हैं। गौतम बुद्ध ने इसी बात को बहुत अच्छी रीति से कहा है कि एक सेकंड पहले की सृष्टि विलीन हो जाती है और दूसरे ही सेकंड नई सृष्टि का सृजन होता है। इस प्रकार से परिवर्तन सृष्टि का नियम है। इन परिवर्तनों को जोड़ने वाला धागा समय है। जैसे मोतियों को एक सूत्र में पिरोकर माला बन जाती है और वह माला श्रृंगार के काम आती है, इसी प्रकार से परिवर्तनशील समाज की हर प्रवृत्ति को समय रूपी धागा जोड़ देता है और उसके आधार पर इतिहास बनता है।

संसार की हर प्रवृत्ति परिवर्तनशील है परंतु कई बार हम मनुष्य समय के द्वारा उत्पन्न परिवर्तन के साथ तालमेल नहीं बिठा पाते परिणामरूप हममें जड़ता, अंधश्रद्धा आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। अगर हम सदा ही गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ रहना चाहते हैं तो हमें समय के साथ-साथ परिवर्तन की चुनौती को स्वीकार करना ही चाहिए।

अव्यक्त बापदादा भी पिछले दो-तीन वर्ष से मुरलियों में सेवा में नवीनता की बात कह रहे हैं क्योंकि बाप और दादा दोनों को हमेशा ही नवीनता पसंद आती है। ब्रह्मा बाबा का प्रिय स्लोगन था – कम खर्च बालानशीन अर्थात् सेवा भी अच्छे से अच्छी हो और उसमें ईश्वरीय धन की बचत भी हो। जब मुंबई में पहली प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ तो साकार ब्रह्मा बाबा ने फोन किया तब मैंने बाबा से पूछा कि बाबा, आपने फोन क्यों किया तो बाबा ने कहा कि बच्चों को अक्ल देने के लिए फोन किया। बच्चों को इतनी समझ नहीं है कि पहली बार प्रदर्शनी हुई है, गवर्नर आया है तो इन सब बातों का समाचार तुरंत फोन द्वारा मधुबन भेजना चाहिए। इस प्रसंग के बाद हमने कई प्रदर्शनियाँ की और हर बार उद्घाटन का समाचार फोन द्वारा ब्रह्मा बाबा को सुनाते थे। जब चौथी प्रदर्शनी का उद्घाटन हुआ तो ब्रह्मा बाबा ने ही हमसे पूछा कि बच्चे, फोन क्यों किया तो हमने कहा कि आपने जो श्रीमत दी थी, उस पर चलने के लिए फोन किया। तब ब्रह्मा बाबा ने कहा कि नहीं बच्चे, आपने ईश्वरीय धन को बर्बाद किया है। यही समाचार आप

चार आने के लिफाफे में लिखकर भेजते थे तो दूसरे दिन बाबा को समाचार मिल जाता था। तब से हमने प्रदर्शनी का समाचार फोन पर बताना बंद किया और पत्रों द्वारा समाचार भेजना शुरू किया। इस प्रकार से बाबा ने हमें प्रेक्टिकल में सिखाया कि किसी भी सेवा के महत्व, अनिवार्यता और समयबद्धता को परखते हुए उसमें धन की मितव्ययता को स्थान दिया जाना चाहिए और उस अनुसार जो ज़रूरी परिवर्तन हों, वे कर लेने चाहिए।

जिस प्रकार से संसार परिवर्तनशील है, उसी प्रकार से ईश्वरीय सेवायें भी परिवर्तनशील हैं। बाबा हमें सेवा की प्रेरणा तो देते हैं लेकिन उसमें हमारी बुद्धि चलाने की मार्जिन छोड़ते हैं ताकि हम वर्तमान समय अनुसार उपलब्ध साधन, विधियों और विकसित तकनीक का प्रयोग कर उसे सफल बना सकें। जब हम सेवा में नवीनता का पुरुषार्थ करते हैं तो वास्तव में बाबा की चाहना को साकार करने का प्रयत्न करते हैं और बापदादा की एक्सट्रा मदद का अनुभव भी करते हैं।

मैं हमेशा यह मानता हूँ कि ईश्वरीय यज्ञ का इतिहास अनेक

रूपों में लिखा जा सकता है। एक रूप है स्थान के परिवर्तन का इतिहास कि कैसे हैदराबाद से कराची, कराची से आबू और फिर आबू से दुनिया के विभिन्न देशों तक सेवाएँ बढ़ीं।

दूसरा इतिहास व्यक्तियों के आधार पर हो सकता है कि किस प्रकार से अनेक नाम-रूप के व्यक्तियों ने ईश्वरीय सेवा को आगे बढ़ाया, जो हमारे पूर्वज हैं और जिनके अथक प्रयास से यह विश्व विद्यालय पिछले 75 वर्षों में बहुत आगे बढ़ा है।

इसी प्रकार से इतिहास भवनों पर भी बना सकते हैं कि कैसे हैदराबाद में जशोदा निवास से यज्ञ का प्रारंभ हुआ और फिर संस्था बढ़ी तो नये मकान किराये पर लिये गये फिर ट्रांसफर होकर कराची आये, तत्पश्चात् माउंट आबू आये। माउंट आबू में भी पहले बृजकोठी, फिर भरतपुर कोठी, उसके बाद कोटा हाऊस एवं धौलपुर हाऊस, बाद में पोखरान हाऊस (वर्तमान पांडव भवन) लिया गया। विश्व नवनिर्माण संग्रहालय के लिए बूंदी भवन लिया गया। फिर पांडव भवन के अंदर ही हिस्ट्री हॉल और मेडिटेशन हॉल बना। इसके बाद यह स्थान-सरिता ओमशांति भवन, सुखधाम आदि से बहती हुई नीचे आबू रोड में शान्तिवन, मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स

तक पहुँच गई और अभी भी इसकी यात्रा निरंतर जारी है।

इसी प्रकार से ईश्वरीय सेवाओं में आये परिवर्तन के आधार पर भी इतिहास लिखा जा सकता है कि कैसे समय प्रति समय नये-नये सेवा के साधन अपनाये गये। कारण कि एक समय जो विहंग मार्ग की सेवा लगती है, समय अनुसार उसका महत्व कम हो जाता है और दूसरी नवीन सेवा को उसका स्थान मिल जाता है। इस प्रकार सेवा में आधुनिकता को स्थान मिलता गया जिससे सेवाओं की गति जोर पकड़ती गई।

सेवा के क्षेत्र में पहले मुख्य सेवा थी गीता पाठशाला व सेवाकेन्द्र आदि की स्थापना करना। प्रारंभ में तो दादियाँ स्वयं स्थान-स्थान पर जाकर मुरली क्लास कराती थीं। फिर स्थायी सेवाकेन्द्रों का निर्माण हुआ, नये साथी आये और उन्होंने सेवा के स्तर को आगे बढ़ाया। इस प्रकार सेवा का विस्तार होने से आज 137 देशों में 8500 से अधिक सेवाकेन्द्रों में बाबा की सेवायें चल रही हैं। सेवा के स्वरूप में भी परिवर्तन हुआ। पहले प्रवचन, प्रदर्शनी थी, बाद में प्रोजेक्टर आया। गीत, डायलाग, ड्रामा, नृत्य नाटिकाओं की मदद भी सेवाओं में ली गई। इसी दौरान विदेश की सेवायें भी शुरू हुईं। भारत में पीस काफ़्रेस द्वारा विदेश के वी.आई.पी. के आने

का सिलसिला प्रारंभ हुआ। जैसे-जैसे संख्या बढ़ती गई, सेवा के लिए नये हॉल तथा आवास-निवास सुविधाओं का विस्तार किया गया। ज्ञान सरोवर में रिट्रीट होने लगी और यह विदेशियों की सेवा का विशेष स्थान बन गया। ग्लोबल हॉस्पिटल, पीस पार्क, तलहटी में डायमण्ड हॉल, मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स आदि का निर्माण हुआ। मुंबई शहर में 19 गार्डन सेवा के लिए मिले और फिर ओ.आर.सी., शान्ति सरोवर आदि ऐसे बड़े-बड़े रिट्रीट के स्थान बने जिनके द्वारा सेवायें सहज और विश्व स्तरीय होती गईं।

पहले दिल्ली में ओमशांति स्टूडियो बना जिसके माध्यम से टीवी चैनल्स के द्वारा बाबा का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया। अभी मनमोहिनी कॉम्प्लेक्स में गॉडलीवुड स्टूडियो बना है जिसके द्वारा सेवाओं को नया आयाम मिलेगा। अगर हम इस परिवर्तन की चुनौती को स्वीकारते नहीं तो सेवा का क्षेत्र सदाबहार नहीं रहता।

एक छोटी-सी बात है, पहला-पहला गीत 'वसुधा के आंचल में शिव स्वागत आज तुम्हारा' बना। शुरू में यह बहुत प्रसिद्ध हुआ, बाद में अन्य गीत बनते गये, अभी लगभग 2500 जितने गीत विभिन्न भाषाओं में बन गये हैं। इन सब साधनों के द्वारा

साधना भी सहज हो गई है। मुरलियाँ पहले कई दिनों में प्राप्त होती थीं, अभी विज्ञान के ऑनलाइन साधन द्वारा अपने-अपने स्थान पर रहते हुए भी अव्यक्त बापदादा से मिलन मना सकते हैं। 'पीस ऑफ माइंड' चैनल तथा रेडियो मधुबन भी विगत एक वर्ष से प्रारंभ हुए हैं जिससे मुख्यालय में चल रहे विभिन्न कार्यक्रमों को भी हरेक व्यक्ति टीवी में देख सकता है। इस प्रकार विज्ञान के साधनों द्वारा ईश्वरीय सेवा के क्षेत्र में समय प्रति समय क्रांति आई है।

जब सन् 1952 में दैवी बहनें सेवा के लिए निकली तब साकार बाबा ने उन्हें लक्ष्य दिया था कि हरेक आत्मा को बाबा का संदेश सुनाना है कि परमात्मा का दिव्य अवतरण हुआ है और आप अपने पिता परमेश्वर से अमूल्य वर्सा प्राप्त कर सकते हैं। अभी शिवबाबा ने श्रीमत दी है कि प्रवचन से ज्यादा सेवा अनुभव कराने से होती है।

इस सीज़न की पहली अव्यक्त मुरली से ही शिवबाबा ने सेवा के क्षेत्र में परिवर्तन की बात शुरू की। बाबा रिज़ल्ट वाली सेवा चाहते हैं जिसे इंग्लिश में कहते हैं, Result oriented Godly Service. बापदादा ने वारिस तथा माइक क्वालिटि की आत्मायें निकालने पर विशेष ज़ोर दिया है। योग के क्षेत्र में

भी बाबा ने परिवर्तन की बात कही है कि अभी ज्वालामुखी योग करने की ज़रूरत है। इसके साथ-साथ संकल्प, समय की बर्बादी न हो, उसका ध्यान रखने को कहा। समय की सावधानी की सूचना भी हम बच्चों को मिलती रहती है। इसलिए हमें अपने सेवा के स्तर, साधन और साधना में परिवर्तन करना चाहिए।

दुनिया में भी समय के साथ-साथ जो विज्ञान के नये-नये आविष्कार निकलते, उन्हें अपनाना ज़रूरी है क्योंकि पुराने साधन अप्रचलित हो जाते हैं। कंप्यूटर के क्षेत्र में ही देखिये। पहले हम बच्चों ने रशियन कंप्यूटर को सीखा जिसके अंदर दो इंच की पट्टी के द्वारा रिकॉर्डिंग की जाती थी और एक बड़ी अलमारी में उसे रखते थे। बाद में ASX नाम का साधारण कंप्यूटर आया, बाद में Personal Computer आये, फिर उसमें भी परिवर्तन होते रहे। पहले गत्ते की डिस्क थी, बाद में फ्लॉपी, सीडी, पेनड्राइव आदि आये। मिसाल के तौर पर मधुबन में सिंगापुर से सौगात में इलैक्ट्रॉनिक टाइपराइटर आया। दो-तीन साल इस्तेमाल करने के बाद उसका कोई पुर्जा बिगड़ गया। भारत में इसके पुर्जे की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ किया पर नहीं मिला। तब हमने उसे सिंगापुर कंपनी में भेजा कि वे हमें रिपेयर करके दें। उस

कंपनी ने हम लोगों को कहा कि यह मॉडल पुराना हो गया है। अब तो हमारे पास इसका कोई स्पेयर पार्ट नहीं है। इस प्रकार वह रद्दी की वस्तु बन गया। पहले कार्बन पेपर द्वारा कॉपी निकलती थी, फिर बाद में साइक्लोस्टाइल मशीन आई। अब तो ज़ेरोक्स मशीन एवं कंप्यूटर द्वारा बहुत सहज रीति से कॉपी निकलती है। दो साल पहले हमने अव्यक्त बापदादा को संदेश भेजा था कि बाबा ईश्वरीय सेवा का कारोबार बहुत बढ़ गया है और हमें 24 घंटे भी कम पड़ते हैं। तब स्टेज पर हम तीनों वरिष्ठ भाइयों को अव्यक्त बापदादा ने कहा कि अभी तक तो कुछ भी ईश्वरीय सेवायें नहीं हुई हैं, कारण कि अंतिम समय की सेवाओं की भेंट में जितनी सेवायें होनी चाहिए, उतनी नहीं हुई हैं। इसलिए हम बच्चों को अभी से अंतिम समय की सेवा के लिए तैयारी करनी होगी इसलिए बाबा हमें मनसा सेवा और ज्वालामुखी योग सिखा रहे हैं।

यह लेख मैंने इसलिए लिखा है कि वर्तमान में जो भी अव्यक्त बापदादा की प्रेरणायें हैं, उन्हें सूचना के रूप में समझकर हम अपने पुरुषार्थ और सेवा की पद्धति में परिवर्तन करें। हम नये साधन और नई विधियों की चुनौती को स्वीकार करेंगे तो ही हम तीव्र पुरुषार्थी और एवररेडी बनेंगे।



‘पन्न’ संपादक के नाम

ज्ञानार्जन की दृष्टि से ज्ञानामृत मानसिक स्थिति में श्रेष्ठता एवं भव्यता पैदा करने में सक्षम है। दिसंबर 2011 के अंक में ‘स्वस्थिति श्रेष्ठ तो परिस्थिति समाप्त’ लेख बहुत ही महत्वपूर्ण एवं प्रेरणादायक है। आठ संकल्प भी स्वस्थिति श्रेष्ठ बनाने के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। वास्तव में श्रेष्ठ चिंतन ही श्रेष्ठ जीवन का आधार है। बार-बार चिंतन एवं मनन करने के पश्चात् विरोधियों, आलोचकों के प्रति दिल और दिमाग से क्षमा करने की भावना पैदा होने से तनावपूर्ण मानसिक स्थिति से छुटकारा मिल सका। ज्ञान रूपी प्रकाश के लिए लेखक को बहुत-बहुत धन्यवाद!

- पी.एल. जैन, बूंदी

अक्टूबर, 2011 अंक में ‘संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन’ लेख स्वपरिवर्तन का आधारभूत लेख है, बहुत आकर्षक लगा। नये संस्कारों से ही नये विश्व का निर्माण होता है। ‘वृद्धावस्था बनाम वृहद आस्था’ भी अति सामयिक एवं उपयोगी लगा। ज्ञानवर्द्धक, उत्साहपूर्ण एवं विविधताओं का अत्यंत सुंदर संग्रह है यह पत्रिका। दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी द्वारा जटिल प्रश्नों का उत्तर इतने सरल रूप

से दिया जाता है कि प्रश्नकर्ता एवं पाठक नतमस्तक हो जाते हैं। सम्पादकीय भी अत्यंत रोचक एवं आकर्षक होता है।

- ब्र.कु. अजीत प्रसाद, पटना

ज्ञानामृत पत्रिका अत्यंत ज्ञानवर्धक, तर्कसंगत लगती है। इसमें प्रकाशित लेख मानव आत्माओं को मन की गहराइयों में झांकने अर्थात् आत्मचिन्तन करने व बुराइयों से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं। इसका अध्ययन, मनन कर व्यक्ति अपने को दैवी गुणों से संपन्न कर सहज ही कल्याण कर सकता है। अक्टूबर 2011 अंक में ‘दीपावली का आध्यात्मिक रहस्य’, ‘स्वर्ण-मृग प्रसंग’, ‘संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन’ अत्यंत ज्ञानवर्धक लगे।

- बी.पी. उप्रेती, अल्मोड़ा

जनवरी 2012 अंक के मुखपृष्ठ पर पिताश्री के मनमोहक चित्र ने मन को मोह लिया। बार-बार उसे निहारते हुए वे शब्द ‘होकर के संपन्न आ जाओ, मेरे राजदुलारे’ मन में बड़ी भावना पैदा करने वाले हैं। संजय की कलम के अंतर्गत ‘जब यह बच्चा आता है तो शिवबाबा मेरे में प्रवेश करते हैं’, यह बात जानकर बेहद खुशी हुई कि हमारे जगदीश भाई जी

कितने भाग्यवान हैं। इस मास के संपादकीय लेख ने हमें दादा लेखराज जी के परिवार के दर्शन करा दिये। दादी गुलजार जी के साथ प्रश्न-उत्तर ने मन की शंका को दूर कर दिया। रम्झू-रम्झबाज़ बाबा ने ब्र.कु. गोपाल भाई के अमेरिका जाने के उत्सुक मन को बदल दिया, यह भी बड़ा प्रभावशाली रहा। ब्र.कु.शीलू बहन की दास्तान पढ़कर मन गद्गद हो गया। चौरासी साल की बी.के.शंकरी जी का लेख पढ़कर पता चला कि वे मुरली को पांच बार पढ़ती हैं। बी.के.रमजान भाई ने बड़ी हिम्मत दिखाई आगाखां को चित्र भेंट करने की। विविधता भरे इस अंक को बार-बार पढ़ने को मन करता है, फिर-फिर नया लगता है। ज्ञानामृत परिवार को बधाई!

- ब्र.कु.प्रेरणा, भुवनेश्वर

ज्ञानामृत में ज्ञान समाया,
धर्म का दरिया बहता है।
सत्य, नीति का अमृत है ये,
प्यार का सागर रहता है।
प्रेम सिखाता, बैर हटाता,
भाईचारा देता है।

अंधकार जीवन का हरकर,
उजियारा भर देता है।
बाबा के दर्शन होते हैं,
शांति हृदय में आती है।
ज्ञानामृत की वाणी अमृत,
हमको बहुत ही भाती है।

- डॉ. शरद नारायण खरे, मंडला

हाफ पार्टनर

● ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

रामा ताई ने जब देखा कि सेठानी एक साधारण महिला को साड़ियाँ दिखाकर समेट रही है तो उसके मन में प्रश्न उठा कि इतनी बड़ी सेठानी को भला साड़ियाँ बेचकर कमाने की कौन-सी मुसीबत आन पड़ी। जब बात मन में नहीं रह पाई तो पूछ ही लिया, क्यों सेठानी जी, बुढ़ापे में शान्ति से बैठना अच्छा नहीं लगता क्या जो साड़ियों के जंजाल में उलझ पड़ी? सेठानी ने कहा, यह तो समय काटने का बहाना भर है, और शीघ्रता से अंदर चली गई। सेठानी के पाँव भीतर की ओर बढ़ रहे थे पर यादों के पन्ने चार दीवारी को फांद दूर-दूर उड़ान भर रहे थे।

आज से ठीक 40 वर्ष पहले, यही मंगलवार का दिन था, घर में उसने लड़के वालों के आने और उसे देखकर जाने की खुसर-फुसर सुनी थी। सुनकर बड़ा बुरा लगा था, पर कहे किससे! उदास नेत्रों के अनकहे बोल केवल चाची ने सुने थे, इसलिए एकांत में ले जाकर बोली थी, हम तुमको घर से निकाल थोड़े रहे हैं, अरे तुम तो रानी बनने जा रही हो, रानी।



रानी?

और नहीं तो क्या, शादी के बाद तुम पति के घर की रानी ही तो हो, भारतीय समाज में नारी को, नर की अर्धांगिनी कहा गया है, अर्धांगिनी माना हाफ पार्टनर; देख, जैसे व्यापार में भागीदार होता है, ऐसे ही नारी, पति की चल-अचल जो भी जायदाद हो, उसमें आधी हकदार होती है। अब हमारे राजकुमार-से जमाई की तो दो मिलें हैं, 20 बीघा ज़मीन है, घर क्या है पूरी हवेली है राजाओं-महाराजाओं जैसी और सोना भी पूरा 50 तोला देने

वाले हैं, तो रानी हुई कि नहीं?

चाची की बात तो कुछ-कुछ ही गले उतरी पर पंडित ने फेरों पर भी वही बात दोहराई कि कन्या पति के धर्म, कर्म में आधी हिस्सेदार है तो बात मन में बैठ गई और वह पिता की संपत्ति से मोह तोड़, बिना किसी कचहरी के, कागज़, स्टैम्प के हाफ पार्टनर बन इस हवेली में आ गई।

पिता के इकलौते पुत्र रत्नचन्द जी ने सेठानी की हर इच्छा पूरी की। खाने-पीने, पहनने, दान-पुण्य करने, घूमने-फिरने पर कभी रोक नहीं लगाई। पैसे देकर कभी हिसाब तक भी नहीं पूछा।

दो बच्चों के आने से खर्चे भी बढ़े पर सेठानी का हाथ कभी तंग न हुआ। कभी-कभी तो उसे यह भी अहसास होता कि वह हाफ पार्टनर नहीं पर पूरी मालिक है। शिव मंदिर निर्माण में पूरा पाँच लाख दिया, सेठ जी ने चूँ तक नहीं की।

बड़े होते बच्चों के शादी-ब्याह रचाए गए। कन्या अपने घर चली गई, पुत्रवधू घर में आ गई। शादी में भी दोनों हाथों दौलत लुटाई, सेठ जी ने कोई रोक-टोक नहीं की।

उस दिन पुत्रवधू पीहर गई थी, घर में दोनों अकेले थे। मौका देख सेठानी ने बात शुरू कर दी, 'सेठ जी, शरीर नश्वर है, हम धीरे-धीरे अंतकाल की ओर बढ़ रहे हैं। जब तक आप हैं, मुझे कोई चिन्ता नहीं, पर कोई निश्चित तो नहीं, कौन पहले जाए। मैं पहले जाऊँ, यह तो मेरा सौभाग्य है, वैधव्य न ढोना पड़े पर अनहोनी घट जाए और मुझे आपके जाने का दुख झेलना पड़े, तो कम से कम इतना तो कर दीजिए कि बेटे-बहू के आगे हाथ न पसारना पड़े। मुझे बच्चों का मोहताज होना न पड़े। आज की मालकिन कल की भिखारिन न बन जाए। कुछ जायदाद या पैसा मेरे नाम करवा दीजिए। मेरे बाद मेरे पुत्र का तो है ही पर जीते जी का एक सहारा तो चाहिए।'

सेठ जी हँस पड़े, अरे कुछ क्यों, सारा तुम्हारा ही तो है।

मैंने कब कहा, मेरा नहीं है, पर यह बात आप कह रहे हैं, पुत्र और पुत्रवधू तो नहीं मानेंगे ना कि सब कुछ माँ का है। और लिखत में नहीं होगा तो कोई भी नहीं मानेगा, न समाज, न सरकार। आपके शब्दों मात्र में मैं हाफ या फुल पार्टनर हूँ पर हकीकत में तो मैं ज़ीरो पार्टनर ही हूँ। ज़ेवर भी आपने पुत्रवधू को दिलवा दिया। अब तो मैं खाली हाथ ही हूँ।

सेठ जी इतनी गंभीर बात पर भी गंभीर नहीं हुए, बस इतना कहा,

इतना लंबा क्यों सोचती हो, अभी तो सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है। और फिर हमारा पुत्र ऐसा क्रूर तो नहीं है जो माँ के निवाले गिनने लगेगा।

मैं भी कहती हूँ, मेरा बेटा दुनिया से अच्छा है पर समय की हवा ऐसी खराब है, नौ मास पेट में रखने वाली माँ के नौ दिन भी भारी हो जाते हैं इसलिए मैं फिर विनय करती हूँ कि कुछ तो मेरे नाम करवा दीजिए...।

पुत्र की पगध्वनि सुन वह बीच में ही चुप हो गई। रत्नचंद जी अपने धंधे पर चले गए। अधूरी बात अधूरी ही रह गई और एक दिन सेठ जी अचानक संसार से भी चले गये। कुछ रोज़ शोक मनाकर, धैर्य बंधाकर मित्र-संबंधी सब चले गये, पुत्र ने काम-धंधा संभाल लिया, गाज गिरी तो केवल सेठानी पर। वह फुल पार्टनर, हाफ पार्टनर के पद से फिसलते-फिसलते कब जीरो पार्टनर और फिर नकारा पार्टनर के ओहदे पर पहुँच गई, उसे भी पता न चल सका। मन को लगाने के लिए वह ब्रह्माकुमारी आश्रम जाने लगी। पहले भोलेनाथ भगवान की भक्ति करती थी, अब उससे सर्व संबंध जोड़ उसे याद करने लगी। मन को शान्ति मिलने लगी। दस-पाँच रुपये रिक्शे के भाड़े के तो बहू-बेटों को भारी नहीं लगे पर तूफान तो उस दिन उठा जब माउंट आबू जाने के लिए बेटे को टिकट बनवाने को कहा।

माँ, क्या रखा है इतनी दूर जाने में और इतना पैसा खर्च करने में, ऐसा ही यहाँ, ऐसा ही वहाँ। घर के खर्चे, बच्चों की पढ़ाई... मैं अकेला क्या-क्या करूँ?

बेटा, तेरा पिता कोई कर्जा तो छोड़ नहीं गया, उसका सारा का सारा तेरा ही तो है, तो क्या उसमें से मेरे लिए...

माँ, बाबूजी के आगे जो किया सो किया, मेरे आगे ये सब अनाप-शनाप खर्चे नहीं चलेंगे।

दुतकारी हुई भिखारिन की तरह वह बेटे के सामने से हट गई पर आँसुओं का बाँध टूट गया। उसे याद आया वो दिन जब शिव मंदिर के लिए पाँच लाख चुपके से दे आई थी, आज पाँच हजार के लिए भी बेटे के आगे हाथ पसारकर अपमानित होना पड़ रहा है। घर वही, संपत्ति वही, सब कुछ वही, नहीं है तो केवल उसका अधिकार। सेठ जी की आत्मा कहीं से तो यह सब देख ही रही होगी और सोच भी रही होगी कि उस दिन जो मैंने कहा था, आपके जाने के बाद भिखारिन ना बनना पड़े, वह बात सच बनकर सामने खड़ी है।

तभी खिलखिलाकर हँसने की आवाज़ से उसका ध्यान बँट गया। बेटा पूछ रहा था, सच बता, इस महीने कितनी बार ब्यूटी पार्लर गई हो? केवल चार बार, पुत्रवधू की आवाज़ थी, इतने बड़े सेठ की सेठानी हूँ, मास

में दो हजार पार्लर में खर्च कर भी दिए तो कौन-सी बड़ी बात हो गई...।

आगे के शब्द सड़क पर जाती गाड़ी के हॉर्न में खो गए। उसने आँसुओं को पोंछ डाला और अपने कंधों को सहलाया, बुड़बुड़ाई, जब तक इन कंधों में दम है, भिखारिन नहीं बनूँगी। हवेली के पिछवाड़े में कुछ सामान रखकर मोहल्ले वालों को बेचूँगी। बेटे-बहू को फुर्सत ही कहाँ है, माँ को देखने की। और देख भी लिया तो क्या? माँगने से तो अच्छा है कमा लेना। रही बात यह कि लोग क्या कहेंगे, यही कहेंगे ना कि भरे घर की मालकिन सेठानी को यह धंधा करने की क्या ज़रूरत है पर माँगने से तो कमा लेना कई गुणा अच्छा है। जब तक हाथों में ताकत है, हाथ नहीं पसारूँगी।

वह उठ खड़ी हुई और जाने-पहचाने थोक व्यापारी से कुछ साड़ियाँ ले आई। आस-पास की साधारण महिलाएँ पीछे के दरवाज़े से आती, 10-20 रुपये के मुनाफे से सेठानी साड़ियाँ बेचने लगी। कभी-कभी सोचती, जिस घर की सुख-शान्ति के लिए 18 वर्ष से 58 वर्ष तक का कीमती समय लगाया, घर के मालिक के दुख, दर्द, चिन्ता, बीमारी में सदा हाफ पार्टनर बनी, नहीं बनी तो केवल धन में। बाकी सबमें हाफ और फुल मालिक बनने वाली धन के मामले में ज़ीरो पार्टनर ही रह गई।

उसके पास न दलील है, न अपील है, न वकील है, शिकायत करे तो भी कहाँ?

घड़ी ने टन-टन करके 6 घंटे बजाए तो वह यादों की गलियों से निकल वर्तमान में आ गई। सायंकालीन मुरली क्लास का समय होने जा रहा था। आज सुबह नहीं जा पाई थी, इसलिए डायरी-पेन उठा राजयोग केन्द्र की ओर बढ़ चली।

तन्मयता से मुरली सुनते-सुनते आँखों के कोर से दो मोती-बिन्दु उस समय डायरी के धवल पन्नों पर गिर पड़े जब भगवान शिव ने कहा, “पति और पत्नी हाफ पार्टनर होते हैं तो उनको (पत्नी को) आधा हिस्सा मिलना चाहिए। पहले आधा उनका निकाल बाकी आधा बच्चों को देना चाहिए। परंतु आजकल तो बच्चों को ही सारा धन दे देते हैं। कोई-कोई का मोह बहुत होता है, समझते हैं हमारे मरने के बाद बच्चा ही

हकदार रहेगा। आजकल के बच्चे तो बाप के चले जाने पर माँ को पूछते भी नहीं। कोई-कोई मातृ-स्नेही होते हैं। कोई फिर मातृ-द्रोही होते हैं। आजकल बहुत करके मातृ द्रोही होते हैं। सब पैसे उड़ा देते हैं। धर्म के बच्चे भी कोई-कोई ऐसे निकल पड़ते हैं जो बहुत तंग करते हैं।” लेकिन ये मोती दुख के नहीं, इत्मीनान के थे। दुनिया में कोई अपील, दलील उसके पक्ष में हो या ना हो पर भगवान शिव, विधि-विधाता, भाग्य-निर्माता तो संपूर्ण रूप से उसी के पक्ष में है। एक जन्म का पुत्र मातृ-द्रोही हो गया तो क्या हुआ, सर्वशक्तिवान भगवान तो सदा ही मातृ-स्नेही है। एक जन्म लौकिक अधिकारों को पुत्र ने छीन लिया, कोई बात नहीं, ईश्वर पिता से मिलने वाले 21 जन्मों के सौ प्रतिशत सुख-शान्ति-संपत्ति और पवित्रता के अधिकार को तो कोई छीन नहीं सकता। ❖

ग्लोबल हॉस्पिटल में महत्त्वपूर्ण चिकित्सा सर्जरी कार्यक्रमों की जानकारी

घुटने व कूल्हे के जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी सुविधा

(Regular Knee and Hip Replacement Surgery)

दिनांक : 29 से 31 मार्च तथा 1 अप्रैल 2012

सर्जरी : डॉ. नारायण खण्डेलवाल, मुम्बई से कुशल व अनुभवी सर्जन

(Trained in U.K., Australia and Germany)

पूर्व जाँच के लिये केवल घुटने व कूल्हे के ऑपरेशन के इच्छुक रोगी संपर्क करें -

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, फोन नं. 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

बाबा मिला, सब कुछ मिला

● ब्रह्माकुमार कमलाकर, बलिया

मेरे शरीर का जन्म बलिया जिले के वनवारीपुरा नामक गांव में एक प्रसिद्ध व सम्मानित ब्राह्मण परिवार में हुआ था। यह गाँव राजा ने मेरे लौकिक बाबा को दान के रूप में दिया था। बाबा की पूजा-अर्चना में कोई बाधा न आये इसके लिए गंगा नदी के पास की ज़मीन राजा ने कुटिया बनाने के लिए दी थी। बाद में बहुतेरे लोग बाबा के शिष्य बनके अपना-अपना घर बसाते गये जिस कारण गांव का रूप बन गया।

शान्ति की खोज

इसी गांव में हिन्दी के प्रख्यात कवि हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का भी जन्म हुआ था। बाबा जब तक ज़िन्दा थे तब तक इस गांव में धर्म और श्रेष्ठ कर्म भी था, मन को बहुत शान्ति रहती थी। परन्तु, बाबा के जाने के बाद लोगों का खान-पान, रहन-सहन गलत होने लगा, यहां न धर्म रहा और न श्रेष्ठ कर्म रहा। इस बात को देखकर मेरा मन अशान्त रहने लगा। गांव से दूर भाग जाने का बराबर विचार आने लगा। यही सोच चलता था कि कहां जाऊँ, किसके पास जाऊँ जो मुझे श्रेष्ठ समझ दे सके तथा मन को शान्ति मिल जाये। इसके लिए मंगल शिवरात्रि व्रत शुरू किया। गांव में मन्दिरों को प्रतिदिन धोना, पूजा

करना, गंगा स्नान करना अपनी आदत बना ली। गांव में हरिकीर्तन, रामायण पाठ करना शुरू किया जिसमें बार-बार यही कहता था, सबका कल्याण हो। समय निकाल कर बनारस भी जाता था। वहां छह माह रहकर गंगा स्नान करता और प्रातः 4 बजे विश्वनाथ जी के मन्दिर पहुंच कर चौखट पर माथा रगड़ता ताकि किसी सिद्ध महात्मा के चरण की धूल लग जाये और सही गुरु से भेंट हो जाये। यह देखकर लौकिक मां डर गई थी कि कहीं यह साधु न बन जाये और हम सबको व बीबी-बच्चों को छोड़कर कहीं चला न जाये। एक दिन अचानक मां बीमार पड़ी। उनको हॉस्पिटल ले गया। सुबह मां का सिर मेरी गोदी में था और मुख से राम-राम रटते उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

मानो माँ पुनः मिल गई

मां के मरने के बाद अब मुझे कुछ भी ठीक नहीं लगता था, रोता ही रहता था। एक रात सोते वक्त स्वप्न में देखा कि मेरी मां सफेद वस्त्र धारण कर किसी की याद में बैठी है। सुबह मन्दिर पर बैठा विचार कर रहा था तभी एक मित्र आया और मुझे उदास देखकर बोला कि 8 किमी दूर कठही (सोनवानी) गांव में एक घर पर बोर्ड लगा है – “निकट भविष्य में श्रीकृष्ण



आ रहे हैं” तथा नीचे गीता पाठशाला लिखा है। मैं उसी दिन उस मित्र के साथ वहां पहुंचा। वहां की माता जी ने बड़े ही प्यार से बिठाया, ज्ञान समझाया तो लगा जैसे कि मेरी मां फिर मिल गई है। फिर एक सप्ताह का ज्ञान-कोर्स करके प्रतिदिन ज्ञान मुरली भी सुनने लगा। लगभग 8 माह बाद मेरी सरकारी नौकरी भी लग गयी। बहुत खुशी हुई।

हिम्मते बच्चे, मददे खुदा

कुछ दिन बाद एक मित्र ने मुझसे पूछा कि आप आश्रम पर किस रास्ते से जाते हैं। मैंने बताया कि गांव के बगल के रास्ते से जाता हूँ। यह बात सुनकर वह दंग रह गया और बोला कि उस रास्ते में तो पाँच लोगों का खून हुआ था। शाम होने के बाद उस रास्ते पर कोई नहीं जाता। आप इतनी सुबह कैसे जाते रहे? मैंने कहा, मेरा पिता

परमात्मा मेरे साथ रहता है। मैं उन्हीं की मदद से जाता हूँ लेकिन आपने जो बताया वह हम नहीं जानते थे। आपने बता कर ठीक नहीं किया, डर पैदा कर दिया। फिर भी इसे पेपर समझकर, रोज़ सुबह की भांति मुरली सुनने के लिए चल दिया। सर्दी का महीना था। सुबह के चार बजे थे, खूब कुहासा गिर रहा था। रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। चारों ओर घूमता रहा लेकिन रास्ता नहीं मिल रहा था। मन ही मन बाबा को खूब याद कर रहा था तभी अचानक आसमान से प्रकाश की किरण आयी और अन्दर से आया कि रास्ता मिल गया है। मैं चलता रहा और चलते-चलते सेन्टर पर पहुंच ही गया। यह घटना भाई-बहनों को सुनायी तो उन्होंने यही कहा कि हिम्मत बच्चे मददे खुदा। जिसका साथी हो भगवान, उसका क्या करेगा आंधी और तूफान। फिर तो भय बिल्कुल समाप्त हो गया।

सूली बनी कांटा

इसी तरह, एक दिन मेरे बहनोई घर पर आये थे। उन्होंने कहा कि आप दोनों साधु बन चुके हो, क्या इससे तुम्हारा दुःख दूर हो जायेगा? मैंने कहा, दुःखहर्ता-सुखकर्ता परमात्मा शिव पिता जब हमारे साथ हैं तो दुःख कैसे हो सकता है! हां, यदि किसी जन्म का कोई हिसाब-किताब होगा तो वह ज़रूर चुक्ता करना पड़ेगा लेकिन सूली के बराबर सज़ा,

कांटे की भांति आसानी से चुक्ता हो जायेगी। फिर दुःख की क्या बात है! हुआ भी ऐसे ही। अभी बहनोई गये नहीं थे कि एक घटना घटी। सुबह में गाय का दूध दुहाने के लिए मैंने गाय के बछड़े को पकड़ा हुआ था। तभी गाय लात चलाते हुए तिलमिलाकर मेरे ऊपर गिर गयी। मैं नीचे और गाय मेरे शरीर के ऊपर। घटना को सुनकर गांव के लोग मेरे दरवाज़े पर आ गये और सोचने लगे कि काफी गम्भीर चोटें आयी होंगी किन्तु हुआ कुछ और। जैसे ही होश आया, लोगों

ने मेरा मुसकराता हुआ चेहरा देखा। एक्सरे कराने के बाद देखा गया कि हड्डी के ऊपर बहुत ही मामूली-सा दबाव पड़ा था। यह देखकर डाक्टर कहने लगा कि आपने काफी भाग्य बनाया है जो बड़ी दुर्घटना घटने के बजाय छोटी-सी हो गई। बहनोई भी कहने लगे, धन्य हैं आप और धन्य है आपका शिव बाबा! अब मेरा पूरा परिवार बाबा का बन गया है, हंसी-खुशी से जीवन व्यतीत हो रहा है। बस दिल यही गाता रहता है, बाबा मिला, सब कुछ मिला। ❖

अपना प्यारा मधुबन धाम

ब्रह्माकुमारी रजनी, गुमला

कितना सुन्दर, कितना अपना प्यारा मधुबन धाम,
ब्रह्मामुख से शिव यहाँ देते, सच्चा गीता-ज्ञान।
जनसेवा का सार यहाँ है, फरिश्तों का संसार यहाँ है,
प्रतिभायें रहती हैं यहाँ, तजकर धन, साधन, पद, नाम।
यहाँ कार्यरत हर साधक है, यहाँ नहीं आलस्य बाधक है,
सफल मनोरथ करती यह माटी, मन होता निष्काम।
यहाँ सहज मन से मन मिलता, अनदेखा अपनापन मिलता,
दुख बँटा लेते सब, देकर अपना सुख-आराम।
एक बार जो यहाँ आ जाये, अनगिनत पुण्य उसे मिल जायें,
इस पावन धरती को करते हम श्रद्धा सहित प्रणाम।
तीर्थों में महातीर्थ यही है, इतनी शान्ति न और कहीं है,
इसके पावन परिसर में हम पाते चारों तीरथ धाम।

सहनशक्ति

● ब्रह्माकुमारी किरण, मुंबई (बोरिवली)

इस संसार में अनेक क्षेत्र हैं जैसेकि खेल का क्षेत्र, व्यापार का क्षेत्र, शिक्षा का क्षेत्र आदि-आदि। सभी क्षेत्रों के लिए कानून-कायदे निर्धारित किये गये हैं जिनका उल्लंघन करने वाले को सज़ा या अपयश का भागी बनना पड़ता है। इसी प्रकार व्यवहारिक क्षेत्र के भी कुछेक नीति-नियम होते हैं जिन्हें कर्म के सिद्धांत भी कह सकते हैं। अगर इन कर्म-सिद्धांतों का उल्लंघन किया जाये तो हमारे गलत कर्म ही हमें सज़ा दे देते हैं। कर्म और व्यवहार में आते हमें बहुत-सी बातें सहन करनी पड़ती हैं। भगवान भी कहते हैं, 'मीठे बच्चे, सहन तो करना ही पड़ेगा।' अगर सहन नहीं किया तो हम किसी न किसी के टकराव से चकनाचूर भी हो सकते हैं। इतिहास के पन्नों को पलटाकर देख लीजिए कि जिन्होंने सहन किया, वे ही महान बने हैं बाकी तो गुमनाम ही रह गए। इसलिए अगर महान बनना है तो सहन तो करना ही पड़ेगा।

कुछ लोग सहन करने को कायरता समझते हैं परंतु वे भूल जाते हैं कि सहनशक्ति का अर्थ ही है, सहन करके शक्ति भरना अतः सहन करना कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति है। सहन करने के लिए आत्मा में

अथाह शक्ति चाहिए। जो अंदर अच्छाई रूपी गुण से भरपूर है, वो सहन करने में सक्षम है। जिसके अंदर बुराई रूपी खोखलापन होता है, वह परिस्थितियों को सहन करने में अक्षम और असमर्थ होता है। जैसे फलों से लदे पेड़ को अगर कोई पत्थर मारे तो वह निर्जीव पेड़ भी बदले में फल देता है। हम तो जीते-जागते मनुष्य हैं तो हमें कोई अपशब्द रूपी पत्थर मारे तो हम भी बदले में अच्छे शब्द रूपी मीठे फल दें परंतु ऐसा वही कर सकेगा जो स्वयं सदगुणों रूपी फलों से लदा हुआ होगा।

सहन न होने का एक बहुत बड़ा कारण है मैं पन, अहम् भाव, अहंकार। किसी ने कुछ कहा तो सबसे पहले यही संकल्प आता है कि क्या मुझे कुछ नहीं आता या क्या इतनी-सी बात मैं नहीं जानती? कई बार कोई हमारी गलती बताते हैं तब हमें लगता है कि क्या मैं गलत हूँ या फिर सोचते हैं कि आज तक किसी ने मुझे कुछ नहीं कहा तो आज ये क्यों कह रहे हैं आदि-आदि। ऐसे समय में हम यह भूल जाते हैं कि हर एक आत्मा की पसंदगी अलग-अलग है। हमारी एक बात किसी को अच्छी लगती है, किसी को अच्छी नहीं भी लगती। अब इसका अर्थ यह थोड़े ही

हुआ कि एक बार मैं सही थी, एक बार गलत। नहीं ना! इसलिए तो कहा जाता है कि इस संसार में हर प्राणी निर्दोष है। यह तो एक-दूसरे की पसंदगी और नापसंदगी के ऊपर है।

यदि पानी पूर्व की तरफ बह रहा हो और हमें पश्चिम दिशा में जाना हो तो शक्ति लगानी पड़ती है। जब पानी के साथ बहना हो तब शक्ति नहीं लगानी पड़ती बल्कि अपने आप उस दिशा में पहुँच जाते हैं। ठीक इसी तरह, समय और परिस्थिति को जब हम स्वीकार नहीं कर पाते हैं और कुछ अलग करना चाहते हैं तब हमें जो शक्ति लगानी पड़ती है उसे ही सहनशक्ति कहा जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि परिस्थिति अच्छी है और हम उसके विरुद्ध यानि कुछ उल्टा करना चाहते हैं। नहीं, विपरीत परिस्थिति में या दुख में भी हम खुश रहना चाहते हैं तब हमें जिस शक्ति की आवश्यकता होती है उसे ही तो सहनशक्ति कहते हैं।

कई बार हमारे अंदर कुछेक कमी-कमजोरी होने के कारण भी बार-बार सहन करना पड़ता है। वो कमजोरी हम निकाल दें और परिवर्तन कर लें तो वही पेपर हमारे सामने बार-बार नहीं आयेगा। जब तक हम पेपर में पास नहीं होते तब तक वो पेपर बार-बार देना पड़ता है।

जब तूफान आता है तब छोटे-छोटे, कोमल पौधे झुक जाते हैं और सुरक्षित रहते हैं परंतु अकड़ वाले बड़े-बड़े वृक्ष गिर जाते हैं। इसलिए कहा जाता है,

*झुकता वही है जिसमें जान होती है
अकड़े रहना तो मुर्दे की पहचान होती है।*

प्रकृति से आई परिस्थिति को हम सहन कर लेते हैं क्योंकि सहन करने के अलावा दूसरा कोई चारा ही नहीं है। प्रकृति को अंग्रेजी में नेचर कहते हैं। उसी तरह मनुष्यों की नेचर (स्वभाव) से आई हुई परिस्थिति को भी हमें सहन कर लेना चाहिए। आज तक किताबों में पढ़ते आये हैं कि कोई गाली दे तो फूल चढ़ाओ, दुश्मन को भी दोस्त समझो। परंतु ये सारी बातें हमने किताबों में ही रखी हैं। अगर हम इन बातों को जीवन में धारण कर लें तो लोग हमारे जीवन के ऊपर किताबें लिखना शुरू कर देंगे।

सहनशीलता का आधार है, जीवन में फूट डालने वाली छोटी-छोटी बातों से ऊपर उठ जाना। अंतर्मुखी बनने व आत्म-ज्ञान प्राप्त करने से सहनशीलता आती है। अंतर्मुख होकर शान्ति में स्वयं को ईश्वरीय शक्तियों से संपन्न कीजिए। सदा याद रखिए कि हमें कुछ भी सिद्ध करने की ज़रूरत नहीं है। जो सत्य है वह तो प्रत्यक्ष होना ही है। श्रेष्ठ कर्मों से हम दूसरों का दिल जीत लेंगे तो जीवन में खुशियाँ भर जायेंगी।

सहन करने से फायदे

1. जब हम सहन करते हैं तो झुकते हैं तब देखने वाले अनेक मनुष्य दिल से झुकते हैं।
2. सहन करने से आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहती है।
3. सहन करने से आत्मा पावन बनती है और

व्यक्तित्व निखर आता है।

4. सहन करने से इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में नाम लिखा जायेगा और भविष्य में स्वर्णकाल, स्वर्णिम युग में पहुँच जायेंगे।
5. सहन करने से स्वयं भगवान भी प्यार करता है।

सहनशक्ति के लिए भगवान की शिक्षायें –

1. सहन करेंगे तो शहशाह बनेंगे।
2. जितना सहन करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे।
3. सहन करना है तो खुशी से करो, मजबूरी से नहीं।

कैसे भूलूँ अहसान तेरे..

ब्रह्माकुमार बनबीर सिंह, दिल्ली (शाहदरा)

अपना बनाया, गले लगाया, पूरे किये अरमान मेरे
जान से प्यारे शिवबाबा कैसे भूलूँ अहसान तेरे
मैं तो था चरणों की धूल, चंदन तूने बनाया
राह पड़े पत्थर को तूने पूजन योग्य बनाया
दिल कहता है निश-दिन बाबा करता रहूँ गुणगान तेरे
जान से प्यारे.....

तूने अपने लायक समझा, ऐसा क्या मुझमें देखा
पल में जैसे हो गया जादू बदल गई किस्मत रेखा
खुशियों के मोती बरसायें ये नैना नादान मेरे
जान से प्यारे.....

यह दुनिया जलता जंगल, तू जैसे शीतल छाया
प्यासे तड़प रहे अधरों पर तूने अमृत बरसाया
फिर से महक उठे हैं देखो उजड़े चमन वीरान मेरे
जान से प्यारे.....

आज से पहले क्या जीवन था, कभी रोया कभी मुसकाया
अब मौजों के दिन आए, पाकर तुझको सब कुछ पाया
बिन बोले सब बता रही है, चेहरे पर मुसकान मेरे
जान से प्यारे.....

क्रोध से छुटकारा

● ब्रह्माकुमार सुरेश, शान्तिवन

कहा जाता है, भय को आगे आँख होती है और क्रोध को पीछे आँख होती है। प्रायः हर समझदार व्यक्ति सोचता है कि क्रोध नहीं करना चाहिये लेकिन वह बस इतना ही सोचकर इस बात को छोड़ देता है। अगर क्रोध के कारण हैं तो उनका निवारण भी हो सकता है। क्रोध मनुष्य को दो प्रकार से आता है। एक तो बिना कोई कारण अपने ही संस्कार के वश आता है जैसे ईर्ष्या, नफरत, नाजुक नेचर, पुरानी स्मृतियाँ, व्यर्थ फीलिंग, नेगेटिव संकल्प आदि। दूसरा, जब कोई कारण होता है तब क्रोध आता है। क्रोध के कारण के साथ क्रोध से होने वाले नुकसान का भी ज्ञान ज़रूरी है।

72 घंटे तक रहता है

गुस्से का असर

जब मनुष्य को क्रोध आता है तो 80 से भी ज्यादा स्नायुओं में तनाव बढ़ता है। मस्तिष्क को खून पहुँचाने वाली सूक्ष्म नलिकायें, जो आँखों से दिखाई भी नहीं देती, उन पर ज्यादा बुरा असर होता है। क्रोध से रोग प्रतिकारक शक्ति भी कम हो जाती है और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। गुस्सा करने से नाड़ी तंत्र पर जो बुरा असर होता है, उसको ठीक होने में एक सप्ताह से लेकर 15 दिन तक लग

जाते हैं। एक बार गुस्सा करने से उसका असर मन पर 72 घंटे तक रहता है।

कुछ समय का पागलपन है क्रोध

श्रीमद्भगवद् गीता में क्रोध का वर्णन महाशत्रु के रूप में किया गया है क्योंकि क्रोध की जड़ें बहुत गहरी और सूक्ष्म हैं। क्रोध का बीज देह-अभिमान है, क्रोधी के पूरे शरीर में क्रोध का शासन चलता है। शरीर के हर अंग से वह प्रगट होता है। कई बार मनुष्य गुस्से में कुछ बोलता नहीं है, पर लोग उसका चेहरा देखकर डरते हैं क्योंकि क्रोध चेहरे से तथा हर अंग से प्रगट होता है। उस समय आँखें लाल हो जाती हैं, नाक भी मोटा हो जाता है, होंठ थरथराते हैं, ज़बान लड़खड़ाती है, बोल अमर्यादित हो जाते हैं, जोश भरी आवाज़ निकलती है, बात करते समय हाथ भी उठता रहता है, अंगुली दिखाकर बात करते हैं, टाँगें पटकते हैं, श्वास फूल जाता है, रोंगटे खड़े हो जाते हैं, चेहरा भयानक हो जाता है। क्रोध करते समय कुछ काम करेंगे तो वह भी तेज़ी से करेंगे जैसे यदि कपड़े धोते हैं तो जोश से पटकते हैं, चलेंगे तो भी तेज़ रफ्तार से चलेंगे, गाड़ी भी तेज़ चलायेंगे अथवा बार-बार हॉर्न बजायेंगे। क्रोध कुछ समय के लिए

पूरा ही पागल बना देता है।

जब किसी भी विकार की प्रवेशता होती है तो मनुष्य विवेक से कुछ सोचता ज़रूर है। जैसे लोभ आता है तो पहले सोचता है कि चोरी-ठगी करूँ या न करूँ। लेकिन क्रोध तो विवेक शक्ति को ही नष्ट कर देता है। गीता में लिखा है, क्रोध मनुष्य की बुद्धि का नाश कर देता है। बुद्धि नाश से सर्वनाश हो जाता है।

क्रोध की कोई उम्र-मर्यादा नहीं

कई विकारों की समय मर्यादा होती है, कुछ उम्र के बाद ही आते हैं और निश्चित उम्र के बाद चले भी जाते हैं अथवा हल्के हो जाते हैं। जैसे बुजुर्ग लोग अपनी संपत्ति बच्चों के नाम कर देते हैं, लोभवश पकड़कर नहीं बैठते। छोटे बच्चों में भी लोभ, अहंकार आदि नहीं होते। क्रोध के लिए तो उम्र की भी मर्यादा नहीं। क्रोध दो साल के बच्चे में भी होता है तो 80 साल के बूढ़े में भी होता है।

स्थान-मर्यादा में भी

नहीं बँधता क्रोध

अन्य सभी विकारों में स्थान की भी मर्यादा होती है जैसे कोई मंदिर या तीर्थस्थान पर जाते हैं तो वहाँ पर पवित्रता का पालन करते हैं। यात्रा के समय लोभ को छोड़ दान-पुण्य करते हैं। मोह को भी छोड़ देते हैं, घरवालों

को याद नहीं करते। अपने इष्ट की आराधना आदि करते रहते हैं, पद का अहंकार भी छोड़ देते हैं। कई तो जूते-चप्पल संभालने में भी अपना सौभाग्य समझते हैं। मगर क्रोध के लिए स्थान की भी मर्यादा नहीं। भक्तजन दर्शन करने के लिए लाइन में खड़े होते हैं। उस समय किसी के अंदर क्रोध घुस गया तो हल्ला मच जाता है।

संबंध-मर्यादा से भी

मुक्त है क्रोध

अन्य विकारों में संबंध की मर्यादा होती है। भाई-बहन के संबंध में पवित्रता होती है। माँ-बेटे के संबंध में मर्यादा होती है परंतु क्रोध किसी भी संबंध की मर्यादा नहीं रखता। आजकल बच्चे भी बाप को मारने में देरी नहीं करते। आज लाखों लोग कारावास में सजायें भोग रहे हैं, उनमें से ज्यादातर क्रोध के ही शिकार हैं।

क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए कुछ उपाय

अपनी जीवनशैली में प्रवेश होने वाले क्रोध के कम से कम 10 कारण लिखें। जैसे किसी व्यक्ति के कारण, बच्चों के कारण, वस्तु के कारण, इच्छा पूरी न होने के कारण, नाजुक संस्कारों के कारण, अचानक आई परिस्थितियों के कारण, नुकसान होने पर, अपमान व निन्दा होने से आदि-आदि।

क्रोध का निवारण

क्रोध का कारण हमारी ही कमजोरी है अतः योग के प्रयोग से, ज्ञान के आधार से व अच्छे चिंतन से उन कमजोरियों को मिटायें। किसी व्यक्ति या वस्तुओं के कारण आता है तो अपनी समझ बढ़ायें। अचानक आई परिस्थिति से क्रोध आता है तो मानसिक तैयारी रखें, मनोबल बढ़ाएँ। अनुभवी आत्माओं से परिस्थिति को पार करने की राय लें।

कुछ नुकसान होने पर आता है तो वस्तु से ज़्यादा महत्व अपनी स्थिति को दें। कोई अपमान या निन्दा करता है तो उसको क्षमा करें। कहा जाता है, क्षमा वीरस्य भूषणम् अर्थात् क्षमा करना वीरों का आभूषण है। वास्तव में हम आत्माओं का स्वधर्म ही शांति है। स्वदेश भी शांतिधाम है और शांति के सागर की हम संतान हैं। बस इसी स्मृति में रहने से क्रोध से अवश्य छुटकारा मिल जायेगा। ❖

नक्सलवादी से ईश्वरवादी

ब्रह्माकुमार लालजी भाई, आरंग (छ.ग.)

मैं शराब, माँस, गुटखा खाने लगा था। दोस्तों के संग में ऐसा रंग गया था कि इनसे छूट ही नहीं पा रहा था। पागलों की तरह इधर-उधर भटकने लगा था। तनाव भरी ज़िन्दगी जी रहा था। इस जीवन का कोई मूल्य नहीं रहा था। बस, शराब पीना और दोस्तों के साथ रंग में भंग करना, इसके सिवाय कुछ सूझता ही नहीं था। सभी लोग मेरे को ऐसी भावना से देखते मानो मैं खतरनाक अपराधी हूँ या फिर नक्सलवादी हूँ। इससे मैं त्रस्त हो उठा। जीवन में कोई उमंग-उत्साह नहीं रहा। हताश मन में एक ही विचार चलता था कि मैं इस दुनिया को समाप्त कर दूँ। यही विचार मुझे नक्सलवादी बनने के लिए बार-बार प्रेरित करता था।

तभी मुझे प्यारे बाबा का ज्ञान मिला। राजयोग से जीवन में परिवर्तन आया। जिस दुनिया को खत्म करने के लिए सोचता था, अब उसी दुनिया को सुख-शांति प्रदान करता हूँ। मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, जो सुख ज्ञान और राजयोग में हैं, वह खुशी नक्सलवाद की ज़िन्दगी में नहीं है। इसलिए वो ज़िन्दगी छोड़कर भाईचारे व सदाचार की ज़िन्दगी अपनाओ। तभी हमारी भलाई है, नहीं तो समय बीतता चला जा रहा है। कालों के काल महाकाल आ चुके हैं। अभी नहीं तो कभी नहीं। शुक्रिया, बाबा आपका शुक्रिया, आपने नया जीवन प्रदान किया। मन में यही गीत गुनगुनाता हूँ – बाबा तेरा शुक्रिया, तूने ही भाग्य जगाया है। ❖

मीठी वाणी

● ब्रह्माकुमार चुन्नी लाल बंसल, भिवानी

कौआ काको धन हरे,
कोयल काको देत।
मीठी वाणी बोलके,
जग अपना कर लेत।

जी हाँ, परमात्मा ने मनुष्य को दस इंद्रियाँ प्रदान की हैं उनमें सबसे मुख्य है जीभ। यह एक ऐसी इंद्रिय है जो मनुष्य को स्वर्ग का रास्ता भी दिखाती है और नरक में भी डाल सकती है।

सुन्दर हुआ कुरूप

एक बार एक सुंदर चेहरे ने जीभ से कहा, देखो! मैं कितना सुंदर हूँ, किसी को भी आकर्षित कर सकता हूँ। तब जीभ ने कहा, नहीं, मैं जो चाहे कर सकती हूँ, चाहूँ तो तुम्हारे सुंदर चेहरे को बिगाड़ कर दिखा दूँ। चेहरे ने कहा, दिखाओ। चेहरा राजदरबार में राजा के सामने बैठा था। जीभ ने मुँह से निकल कर राजा को चिढ़ा दिया। फिर क्या था, सैनिकों ने उस सुंदर चेहरे को कुरूप कर डाला। इसीलिए कहा गया है, जीभ ताज भी पहना सकती है और हथकड़ियाँ भी लगवा सकती है। यादगार ग्रंथ रामायण में रावण की बहन सूर्पणखा ने अपनी जीभ के कारण नाक कटवा ली थी।

जीभ वश में तो जग वश में

मनुष्य के पास दो तरह के बाण

होते हैं। एक हैं स्थूल बाण, जो प्राण हरने के लिए चलाये जाते हैं। दूसरे बाण जिह्वा के द्वारा मारे जाते हैं। मुख रूपी कमान के द्वारा निकला हुआ बाण जब किसी को बींधता है तो वह ज़िन्दगी भर उसे सालता रहता है। जीभ हमारा द्वार है, इसको हम अगर वश में रखें तो पूरी दुनिया हमारे वश में हो जायेगी और इसे खुला छोड़ देंगे तो दुश्मनों की कमी न रहेगी। मनुष्य को चाहिए कि वह कम बोले, सत्य बोले, मीठा बोले और धर्मसम्मत बोले।

जवान फिसलने से गहरा घाव

विदुर ने धृतराष्ट्र को कल्याण की बातें समझाते हुए कहा था कि बाणों से बींधा हुआ तथा फरसे से काटा हुआ वन भी पनप जाता है किंतु कटु वचन से किया गया भयानक घाव नहीं भरता। मधुर शब्दों से कही हुई बात कई प्रकार से कल्याण करती है, कटु शब्दों से कही बात महान अनर्थ का कारण बन जाती है। आज घर-घर की यही कहानी है, सास, बहू से प्रेम से नहीं बोलती; भाई-भाई से वाणी का संयम रखकर नहीं बोलता तो प्रेम और भाईचारा कैसे बढ़ेगा? पैर फिसलने के बाद ठीक हो सकता है, जुबान फिसलने से गहरा घाव हो जाता है। इस कारण कहा गया है,

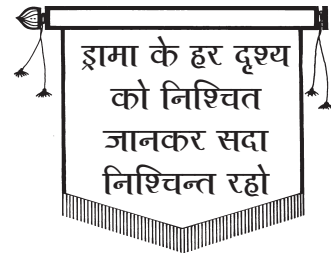
बोलो हमेशा तोलके,
हंसो दिल खोलके।

कबीर जी ने भी कहा है –

मधुर वचन है औषधि,
कटुक वचन है तीर।
वशीकरण एक मंत्र है,
तज दे वचन कठोर।
बड़ा बल है मौन में

कठोर शब्द वर्षों की पक्की मित्रता को क्षण मात्र में तोड़ देते हैं, इसके विपरीत मीठे वचन बड़े से बड़े दुश्मन को भी दोस्त बना देते हैं। वाणी को संयमित करने का एक उपाय है, मौनावलम्बन। मौन में बड़ा बल है। कहावत है, एक चुप सौ को हरा सकता है। अपनी वाणी को संयमित करने के लिए हमें सप्ताह में एक दिन या महीने में एक बार अवश्य मौन व्रत करना चाहिए। उस व्रत वाले दिन आत्म-अवलोकन करें कि मैंने वाणी द्वारा किस-किस का दिल दुखाया है। महात्मा गांधी ने इस व्रत के द्वारा ही दुनिया को राह दिखाई व राष्ट्रपिता की पदवी पाई।

वाणी और पानी का दुरुपयोग करने वाला व्यक्ति ईश्वर का अपराधी है।



अहंकार से होता है पतन

● ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

आज का मानव यह नहीं सोचता कि उसके भीतर क्या घटित हो रहा है। वह तो इसमें ज्यादा दिलचस्पी रखता है कि उसके आगे-पीछे क्या घट रहा है। अगर सूक्ष्म तरीके से सोचें तो पायेंगे कि व्यक्ति तीन तरह की आग में लिपटा हुआ है। पहली, तृष्णा की आग अर्थात् जो कुछ मेरे पास नहीं है, वह सब मेरे पास होना चाहिए चाहे किसी भी तरीके से प्राप्त हो। दूसरा, क्रोध की आग अर्थात् तृष्णा पूरी नहीं होती, उसमें बाधा आती है तो क्रोध आता है। तीसरी, अहंकार की आग, चीज़ की प्राप्ति के बाद शुरू हो जाता है अहंकार।

प्रशंसा है कानों की मदिरा

दूसरों की निन्दा और अपनी प्रशंसा देह अभिमानी मनुष्य को बहुत प्रिय लगती है। यह निन्दा की आदत कब जन्म ले लेती है, उसे पता भी नहीं चलता। यही आदत ही मनुष्य को भगवान से दूर कर देती है। निन्दा भाव रखने वाले अहंकार के कारण धर्मक्षेत्र को भी कुरुक्षेत्र बना देते हैं। अहंकार को मारने के लिए और धैर्य रखने के लिए राजयोग का अभ्यास अति आवश्यक है। जितना राजयोग के अभ्यस्त होते जायेंगे, उतना धैर्य बढ़ता जायेगा और अहंकार गलता जायेगा। अहंकार से ही ईर्ष्या-द्वेष

उत्पन्न होते हैं जो बड़ों-बड़ों को भी छोटा बना देते हैं और पतन का कारण बन जाते हैं। प्राचीन धार्मिक पुस्तकों में एक मिसाल आता है –

काम देवता नारद जी से पराजित हो गये। वे तत्काल नारद जी के पैरों में गिर गये। उन्हें प्रणाम किया, एक पुष्पहार उनके गले में डाल दिया और कहा कि आप धन्य हैं, ऐसा तपस्वी मैंने आज तक नहीं देखा। प्रणाम, पुष्प और प्रशंसा बड़ों-बड़ों को डिगा देती है। प्रशंसा वह मदिरा है जो कानों से पिलाई जाती है और नारद जी यही मदिरा पी बैठे। इस प्रकार कामदेव ने नारद जी को प्रशंसा में उलझाकर उनका पतन करा दिया।

परिवार चलते हैं प्रेम से

परिवार छोटा हो या बड़ा, उसे अहंकार और छल-कपट से नहीं चलाया जा सकता। चलाने का सबसे सुंदर आधार है प्रेम। व्यक्ति को चाहिए कि वह जब भी अपने घर पहुँचे, दुनियादारी के दांव-पेंच, छल-कपट, जूते-चप्पलों की तरह घर के बाहर छोड़कर अंदर प्रवेश करे। मानव जीवन में तीन बातें अहम रोल निभाती हैं –

1. आहार – शुद्ध और संतुलित आहार, परमात्मा की याद में बनाना और खाना, यह तन व मन दोनों को

शक्ति प्रदान करता है। कहते हैं, जैसा अन्न वैसा मन।

2. व्यवहार – व्यवहार में सदा हितकारी वृत्ति व शुभ विचार हों। सबके साथ मिलकर चलें। विनम्र भाव से उद्देश्यपूर्ण ही बोलें; व्यंग्यात्मक, अपशब्द, उपहास जैसे शब्दों का इस्तेमाल न करें।

3. विचार – मन का भोजन है विचार। शुभ विचार व नियंत्रित विचार ही व्यर्थ के विचारों से छुटकारा दिलाते हैं। कहा गया है - वह ज्ञान बोझ है जो भोलापन छीन ले, जो बुद्धि को मद से भर दे, जो अपने साथ आनन्द न लाये और जो अहंकार से मुक्त न करे।

सबसे बड़ा तोहफा है

अहंकार का गिरना

अहंकारी व्यक्ति परमात्मा से कोसों दूर है अर्थात् अहंकार उसके जीवन में बहुत बड़ी खाई है। वह अच्छी संगत पा नहीं सकता। अहंकारी की दोस्ती किसी को भी नहीं भाती। इससे जुड़ी एक घटना इस प्रकार है –

एक संत से मिलने गए राजा ने उन्हें एक महंगा तोहफा भेंट किया। संत ने उसे न लेते हुए कहा, इसे गिरा दो। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और तोहफा गिरा दिया। अगले दिन राजा

फिर मिलने पहुँचे और दूसरा महंगा तोहफा भेंट किया। इस बार भी संत ने कहा, इसे दूर फेंक दो। राजा दुखी हुआ और उसे भी फेंक दिया। फिर राजा ने अपने मंत्रियों से सलाह ली कि संत को क्या भेंट देनी चाहिए? मंत्रियों ने समझदारी से कहा, महाराज, इस बार आप खाली हाथ जाओ। राजा संत के सामने पहुंचा और सोचने लगा, देखते हैं, आज संत क्या गिराने को कहता है। संत ने राजा को सामने देखते ही कहा, राजन्, आज तुम अपने आप को गिरा दो। राजा को कुछ समझ में नहीं आया। संत ने कहा, अपने को गिराने का तात्पर्य है कि अपना अहंकार गिरा दो, आपके अहंकार का गिरना ही हमारे लिए सबसे बड़ा तोहफा है।

अहसान जताना भी अहंकार है

मनुष्य से जब भी गलती हो, वह आत्म-स्वरूप में टिककर गहराई से सोचे। दुर्गुण हमारे अंदर ही समाये हुए हैं जो स्वार्थ, घृणा, ईर्ष्या या अहंकार किसी भी रूप में हो सकते हैं। परमात्मा के आगे समर्पणता के लिए अहंकार को मिटाना बहुत आवश्यक है। अहंकार को मान-शान जरूर चाहिए, अभिमान ही दुखी बनाता है। अभिमानी व्यक्ति अपमान सहन नहीं कर सकता। अहंकार का एक रूप यह भी है, दूसरों की सहायता करके एहसान जताना। अहंकार उन्हें नहीं आ सकता जो सदा

दिव्य गुणों के सर्वअलंकारों से सजे-सजाये रहते हैं। अहंकार उतना ही घातक है जितना काम और क्रोध। भगवान भी गरीब व अनाथ बच्चों को अपना बनाते हैं। ऐसे बच्चों को पद और पैसे का अहंकार वा अभिमान नहीं है तथा मोह व लोभ भी नहीं है। जिस प्रकार आग, आग को समाप्त नहीं कर सकती और पाप, पाप का शमन नहीं कर सकता, इसी प्रकार अहंकार, अहंकार को नहीं मिटा सकता।

अहंकार से परे संपूर्ण निरहंकारी और निर्मल आत्माये ही प्रभु पसंद व दिल में समाई रहती हैं। ईश्वरीय ज्ञान हमें अहंकार से छुड़ाता है। देह और पदार्थों का अहंकार तमोगुणी अहंकार है परंतु गुण, कला और शक्तियों का अहंकार होना भी तो अहंकार ही है। जब तक यह अहंकार रहेगा, तब तक तूफानों के झोंके आते ही रहेंगे लेकिन जब अहंकार समाप्त हो जागा, तब परमात्म स्नेह अपने आप बढ़ने लगेगा। ❖

सबसे बड़ा सर्जन शिवबाबा

ब्रह्माकुमार शंकर परमाणी, हैदराबाद (नागार्जुन)

जुलाई 2011 में जब हम माउंट आबू, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आये हुए थे तब मेरे घर से फोन आया कि मेरे बेटे को हृदयरोग (वाल्व 0.90) हो गया है अतः दो-तीन महीनों के अंदर ऑपरेशन करना जरूरी है। हमने हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ.सतीश गुप्ता जी से भी बात की। उन्होंने भी ऑपरेशन कराने की सलाह दी। मैंने और मेरी युगल ने उसी दिन से अमृतवेले, जब हम अन्य सभी आत्माओं को राजयोग द्वारा शुभ और शक्तिशाली संकल्प देते हैं, अपने बेटे को भी देना प्रारंभ कर दिया। हैदराबाद लौटकर दो महीने के बाद ऊषा मुल्लापुडी, जो हैदराबाद का हृदयरोग का बड़ा हॉस्पिटल है, में एडवांस 90 हजार रुपये जमा करा दिये। शेष एक लाख ऑपरेशन के दिन देने बाकी थे। बेटा एडमिट हो गया। जिस दिन ऑपरेशन होना था, उस दिन वहाँ के सर्जन डॉक्टर ने आकर बताया कि आपके बेटे का हृदय तो तंदुरुस्त है और वाल्व नार्मल 1.4 हो गया है। अभी ऑपरेशन की कोई आवश्यकता नहीं है। साथ ही उसने यह भी कहा कि अपनी भरी हुई रकम वापस लेकर जाओ। वहाँ के मुख्य डॉक्टर ने आश्चर्य खाते हुए कहा, मेरे हाथ का चेक किया हुआ केस है, यह नार्मल कैसे हो गया। लेकिन शिवबाबा तो दुनिया का सबसे बड़ा सर्जन है। हमने कहा, वाह बाबा, शुक्रिया। बाबा की सकाश और दुआओं में कितनी शक्तियाँ हैं, यह हमें अनुभव हुआ। ❖

बाबा ने दिया स्वर्ग-सा सुख

● ब्रह्माकुमारी दुलुराणी, होजाई, आसाम

लौकिक जन्म आसाम के कामरूप जिले में एक धनाढ्य परिवार में हुआ लेकिन शादी गांव में एक गरीब परिवार में हुई। शादी के बाद पारिवारिक हिंसा और विवादों में मुझे बहुत दुख सहन करना पड़ा। दो लड़के और तीन लड़कियाँ, पांच संतानों की माँ हूँ। तीन लड़कियों की शादी के लिए धन इकट्ठा करने की चिंता लगी रहती थी परंतु कुछ कर नहीं सकती थी। कभी मन करता था कि मर जाऊँ तो अच्छा है, सिर्फ एक आश रखकर चलती थी कि आखिर कभी यह दिन भी बदल जायेंगे।

बन गया शाकाहारी और सादा जीवन

परिवार में सिर्फ बड़ा लड़का थोड़ा समझदार था, इकॉनामी से चलता था, घर की समस्याओं को समझता था। अचानक वह भी घर में रहते संन्यासी जैसा रहने लगा। यह देख मैं रोती रहती थी कि पता नहीं मेरे घर में कौन-से महात्मा ने जन्म लिया है, यह तो घरबार छोड़कर संन्यास लेने वाला दिखाई दे रहा है। अब परिवार का हाल क्या होगा, यह चिंता और दुख मुझे लंबे समय तक सताता रहा। एक दिन वह कहता है कि अभी एक भाई आयेगा, भगवान के ज्ञान की कुछ बातें सुनायेगा, आप सुनियेगा।

यह सुनते ही मेरे पांव के नीचे से ज़मीन ही खिसक गई। मैंने सोचा, आज हमेशा के लिए मेरा बेटा मेरे से विदाई ले संन्यासी हो चला जायेगा। तत्पश्चात् एक सफेद वस्त्रधारी भाई आया और मुझे बहुत सुन्दर-सुन्दर ज्ञानयुक्त बातें सुनाई। शाम को बेटा मुझे कहता है कि मैं कहीं नहीं जाऊँगा, भगवान धरती पर आ चुके हैं, वही आपको जानना है। सात दिन आप ज्ञान सुनो, अगर आप नहीं सुनोगे तो आज ही मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा। सिर्फ पुत्र मोह के कारण रोते-रोते मजबूरीवश मेरा गीता पाठशाला जाना हुआ। सात दिन का कोर्स करते-करते मुझे वहाँ अपनापन लगने लगा। बहुत शान्ति का अनुभव हुआ, कोर्स पूरा होते ही मुझे संपूर्ण निश्चय हो गया कि सचमुच यह ज्ञान कोई साधारण ज्ञान नहीं है, भगवान खुद आकर ही यह ज्ञान दे रहा है। फिर तो घर के सभी सदस्य कोर्स करके ज्ञान मार्ग पर चलने लगे। बच्चे भी फैशन आदि का शौक छोड़ खुशी-खुशी शाकाहारी और सादगी भरा जीवन जीने लगे। परिवार में सबका गुस्सा छूट गया। सभी सदस्यों में शान्ति और खुशहाली छा गई। हमें ऐसा लगने लगा कि सचमुच बाबा ने हमारे घर को स्वर्ग बना दिया है।



परिस्थिति में हमें बाबा ने संभाला

पीहरघर और ससुरघर दोनों परिवारों ने इस मार्ग से बचने के लिए मुझे बहुत समझाया और बहुत विरोध किया। लेकिन बाबा के साथ के अनुभवों की छाप से हम अचल-अडोल रहे। आज दोनों परिवार हमें देख बड़ी महिमा करते हैं कि आपने तो घर को सचमुच स्वर्ग बना दिया है। कभी उन्हों के बुलावे पर जायें तो बैठने के लिए नया-सा सफेद कपड़ा बिछा देते हैं और खाने के लिए मंदिर के बर्तन में फल भर कर देते हैं। जब मैं पहली बार मधुबन गई तो आर्थिक स्थिति बहुत कमज़ोर थी पर बाबा से मिलने की तड़प बहुत थी। बाबा ने आज हमें पद्मगुणा भरपूर कर दिया है। झोपड़ी में रहते थे, अब मकान बना दिया है। आज दो बेटे (सुमन और संगीता) आसाम में और बड़ा बेटा (राजू) मधुबन में समर्पित रूप में ईश्वरीय सेवा दे रहे हैं। यह सब

परिवर्तन देख किसका दिल नहीं गायेगा कि बाबा तुम्हें पाके हमने जहां पा लिया है, ज़मीं तो क्या आसमां पा लिया है।

बाबा सचमुच सर्जन है

एक बार ग्लोबल अस्पताल, माउंट आबू में पथरी का ऑप्रेसन कराया था। ऑप्रेसन के छह मास बाद एक दिन अचानक पेट में भयानक दर्द हो गया जिससे मैं न उठ सकती थी और न चल सकती थी और न ही कुछ खा-पी सकती थी। स्थानीय डॉक्टर को दिखाया तो उसने बड़े अस्पताल में रैफर कर दिया। जांच के दौरान पता चला कि आंत में गांठ हो गई है। डॉक्टर ने फिर से ऑप्रेसन करवाने की बात कही। ऑप्रेसन के लिए दो दिन का समय दिया। ऑप्रेसन करवाने से पूर्व मैं रहने के लिए सेन्टर चली गई। अगली शाम को सेंटर में अंतर्राष्ट्रीय योग चल रहा था। मैंने सोचा, अंतर्राष्ट्रीय योग मैंने कभी मिस नहीं किया, मैं कमरे में रहूँ तो दर्द कम होने वाला तो है नहीं तो क्यों न संगठन में ही बैठूँ। मेरे कहने पर मुझे दो-चार लोगों ने पकड़कर संगठन में बिठा दिया।

थोड़े समय के बाद ही मुसकराते हुए ब्रह्मा बाबा स्पष्ट रूप में सामने आकर मुझे दृष्टि देने लगे। बाबा के मस्तक से लाइट की किरणें पिचकारी व इंजेक्शन के मुआफिक मेरे अंदर

समा रही थी। मैं भी हलकी लाइट की कायाधारी हो गई, आनंद में गदगद हो गई। मैंने बाबा को कहा, बाबा, आप मेरे सर्जन हो तो मैं दूसरे के पास जाकर क्यों ऑप्रेसन कराऊँ, आप ही मुझे ठीक कर दो। ऐसी रूहरिहान करते योग पूरा हो गया, सब टोली-प्रसाद खाने लगे। मुझे बहुत भूख लगी थी, मैंने भी टोली खा ली। सब आश्चर्यचकित होकर मुझे देखने लगे कि दो दिन से तो यह कुछ भी खा-पी नहीं सकती थी, अब कैसे खा लिया!

परंतु सचमुच बाबा ने सर्जन बनकर कमाल कर दिया। बिना ऑप्रेसन व उपकरण के बाबा ने अपनी लाइट से मेरी आंत की गांठ खोल दी। कमाल ही कमाल हो गया। मैं खुद आश्चर्यचकित हो गई। मेरा दिल भर आया कि सचमुच बाबा आपका किन शब्दों में शुक्रिया अदा करूँ। कदम-कदम पर बाबा ने विकटतम परिस्थितियों में साथ देकर सदैव हल्का रखा। अपनी पलकों पर बिठाकर रखा। ❖

नई सच्चाइयाँ

वासदेव गर्ग, मानसा

मैंने 15 से 20 अगस्त, 2011 तक माउंट आबू शिविर में भाग लिया। मुझे मेरा एक दोस्त घुमाने-फिराने के लिए माउंट आबू ले गया था। जहाँ मुझे ठहराया गया, वह बहुत सुंदर इमारत थी। वह इतनी साफ-सुथरी थी कि ऐसे महसूस हो रहा था जैसे स्वर्ग धरती पर ही आ गया हो। जब पहले ही दिन का भाषण सुना तो मेरी तो सोच ही बदल गई। उसमें बताया गया कि मनुष्य सिर्फ 84 जन्म ही लेता है। इसके अलावा चारों युगों की समयावधि सिर्फ पाँच हजार वर्ष बताई गई। मैंने महसूस किया कि ये आँकड़े जबानी कलामी नहीं थे बल्कि खोज व सच्चाई के आधार पर थे। ये नई आध्यात्मिक जानकारियाँ थी। ये जानकारियाँ सन् 1937 से, शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के तन द्वारा दी हैं और आज तक इन नई जानकारियों को किसी ने भी चुनौती नहीं दी है। ये नई सच्चाइयाँ खुद शिवबाबा द्वारा उद्घाटित की गई हैं। मेरा भी सिर इन सच्चाइयों के आगे झुक गया और मैं भी शिवबाबा का बच्चा बन गया। ज्ञान में चलते हुए मेरे में ढेर सारे परिवर्तन हो चुके हैं। मैं पहले से शांत और खुश रहने लगा हूँ। मैं लगातार राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ और हर रोज आश्रम जाकर बाबा की मुरली सुनता हूँ। मेरा लक्ष्य है कि मैं बाबा के ज्ञान का खूब प्रचार करूँ। ❖

सबसे बड़ी शक्ति

● ब्रह्माकुमार राजकुमार, श्रीगंगानगर

प्राचीन किंवदन्ती है कि चार दैवी शक्तियाँ पृथ्वी पर भ्रमण कर रही थीं। एक सिद्ध महात्मा ने शक्तियों को पहचानकर प्रणाम किया। वे समझ नहीं पाई कि प्रणाम किससे किया गया है और विवाद करती हुई, महात्मा के पास शंका समाधान के लिए पहुँची। महात्मा ने उन्हें अपना वास्तविक परिचय देने को कहा।

प्रथम शक्ति बोली, मैं विधात्री हूँ। सबका भाग्य लिखती हूँ। मेरी खींची हुई रेखायें अमिट होती हैं। महात्मा ने प्रश्न किया, क्या आप अपनी खींची हुई रेखाओं को स्वयं मिटा भी सकती हैं? 'ना' में उत्तर पाकर महात्मा बोले, तब मैंने आपको प्रणाम नहीं किया है।

दूसरी शक्ति ने अपना परिचय दिया, मैं विवेक की स्वामिनी हूँ। महात्मा बोले, मैंने आपको भी प्रणाम नहीं किया क्योंकि मनुष्य के ठोकर खाने के बाद ही आप आती हैं, समर्थ हो जाने पर वह पुनः बुद्धि से काम लेना बंद कर देता है।

तीसरी शक्ति बोली, मैं धन की देवी हूँ। मनुष्य को समृद्धि देती हूँ, भिखारी को भी राजा बना सकती हूँ। महात्मा मुसकराते हुए बोले, कलियुग में आप जिसको धन-वैभव से संपन्न करती हैं, वह विवेक खो बैठता है। लोभ, अहंकार, फिजूलखर्ची और दुराचार की प्रवृत्ति अपनाते लगता है अतः

आपको भी मैंने प्रणाम नहीं किया है।

चौथी शक्ति ने अपना परिचय दिया, महात्मन्! मैं संकल्प शक्ति हूँ। मेरा सदुपयोग करने वाला कालजयी होता है, वह त्रैलोक्य की अलभ्य वस्तुएँ सहज ही प्राप्त कर सकता है।

महात्मा ने प्रणाम करते हुए कहा, माते! आप महाशक्ति हैं, अजेय हैं, कल्याणी हैं। आपका सदुपयोग करके मनुष्य ईश्वर को पा सकता है। मेरा प्रणाम आपको ही निवेदित था।

उपरोक्त किंवदन्ती में श्रेष्ठ संकल्प शक्ति को ही सर्वोच्च शक्ति माना गया है। कहा जाता है कि ब्रह्मा जी ने संकल्प से सृष्टि रची। संकल्प अनवरत चलते ही रहते हैं चाहें तो हम इन्हें सही दिशा देकर सफल करें या ये यूँ ही व्यर्थ होते रहें। अतः दिन भर चलने वाले संकल्पों को बीच-बीच में चेक करते रहना चाहिए।

मन को खराब न होने दें

संकल्पों की शक्ति अनुभव तब होती है जब संकल्पों की गति धीमी और शांत हो। जब-जब लगे कि मन खराब (मूड ऑफ) हो रहा है तो तुरंत अपने आप को संभालें और दृढ़ संकल्प करें कि मूड ऑफ नहीं होने देना है। हर कार्य करते समय मन में आनन्द का सृजन करें। छोटा-बड़ा कोई भी कार्य करते संकल्पों पर पूरा अटेंशन रखें। मन को खुशी में,

आनन्द में रखना ही कर्मयोग है। इससे हमारा ओरा खुशी, आनन्द का बनता जायेगा जो चारों ओर के वातावरण को महकायेगा। केवल जानकारी के आधार पर अपने आप को ज्ञानी मान लिया, यह अपने आप से बहुत बड़ा धोखा है। परिस्थिति के दौरान हमें मनोस्थिति का अच्छे से ज्ञान हो जाता है कि हम अभी कितने पानी में हैं। इसलिए बाबा कहते हैं, चेकिंग करते चलो और चेंज करते चलो। संकल्प शक्ति के जमा खजाने से ही हम बच्चे एवररेडी होकर अंतिम पेपर में विजयी बनेंगे। ❖

शुक्रिया ज्ञानामृत

ज्ञानामृत का रहता है,
हमको बेसब्री से इंतज़ार।
एक-एक अक्षर में अंकित,
परमपिता का अनमोल प्यार।
नया अंक मिलते ही लगते,
खुशियों के अनगिनत नवपंख।
बजने लगते मन प्राणों में,
दिव्य नगाड़े, मीठे शंख।
ज्ञानामृत की संजीवनी,
देती नवजीवन दान।
जन्म-जन्म के कटते पाप,
जब मिलते स्वयं भगवान।
शुक्रिया आपका ज्ञानामृत के,
रूहानी विद्वान सुजन, सुमन।
बाबा की शिक्षाओं से आपने,
कर दिया धन्य पावन जीवन।

— ब्रह्माकुमारी ललिता जोशी,
कोदरिया (महू)

तलाश वूरी हुई

इन्दौर मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक और औद्योगिक राजधानी है। अहिल्या देवी की इस नगरी में स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा स्थापित एक अद्भुत, सर्व सुविधायुक्त और विशिष्ट कन्या छात्रावास है जिसका नाम है-“शक्ति निकेतन”। प्रस्तुत है यह लघु नाटिका इसी शक्ति निकेतन के क्रियाकलापों की जानकारी हेतु...

पात्र परिचय-

माता - ज्योति, पिता- प्रकाश, बेटी - रूही
रूही की सहेलियाँ- सौम्या और मन्नत।
इन्दौर हॉस्टल में पढ़ने वाली कुमारी - सुधा

(प्रकाश को ऑफिस से बीस हजार का बोनस मिला है। वे अपनी पत्नी ज्योति को घुमाने ले जाना चाहते हैं पर ज्योति शहर में पधारे मशहूर संत के प्रवचन सुनना चाहती है। प्रकाश, ज्योति को सत्संग में जाने से सख्त मना कर देते हैं। इस पर ज्योति बेहद उदास हो जाती है। इस प्रकार की खिटापिट दोनों में अक्सर होती रहती है। ज्योति और प्रकाश की बेटी रूही यह सारा दृश्य देख रही है)

रूही - (स्वयं से) मेरी माँ तो इस घर की गुलाम है, इतनी पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी अपनी मर्जी से कोई अच्छा काम भी नहीं कर सकती। क्या पढ़ाई करने के बाद मेरी भी ऐसी ही हालत होगी? वही परंपरावादी बातें, वही शादी, वही बच्चे, वही तानाकशी, वही घिसा-पिटा रूटीन, मेरा जीवन भी क्या ऐसे ही व्यतीत हो जाएगा? पर इसके अलावा और रास्ता ही क्या है मेरे लिए? मैं क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।

(तभी सौम्या का प्रवेश)

सौम्या - हैलो रूही, देखो यह वेस्टर्न आउटफिट मुझ पर कितना जँच रहा है ना?

रूही - सौम्या अब हम बड़े हो गये हैं। हमको ऐसा पहनावा अब शोभा नहीं देता। तुम तो जानती ही हो कि आजकल

की दुनिया कैसी है? जितना हम मर्यादित ड्रेस पहनते हैं उतना ही हम औरों की बुरी दृष्टि से सुरक्षित रहते हैं।

सौम्या - क्या बात कर रही हो रूही? लगता है तुम्हारा मूड ठीक नहीं है। यदि हम टाइमली फैशन के अनुसार नहीं चलेंगे तो लोग हमें बेकवर्ड नहीं कहेंगे?

रूही - तुम्हारी मर्जी, तुम चाहे जो करो। मुझे तो ऐसे जीवन की ही तलाश है जो पूरी दुनिया की लड़कियों से अलग हो, जहाँ मैं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी आत्मिक उन्नति कर सकूँ, चारित्रिक विकास कर सकूँ, स्वयं के लिए एक महान लक्ष्य हासिल कर सकूँ।

सौम्या - ओ...हो...हो.....ऐसा लगता है तुम तो पूरी संन्यासिनी ही बनना चाहती हो।

रूही - मुझे पता था, तुम मेरी हंसी उड़ाओगी ही।

सौम्या - हा...हा...हा..तुम बात ही ऐसी कर रही हो।

(मन्नत का प्रवेश)

मन्नत - क्या बातें चल रही हैं तुम दोनों में? तुम्हें पता है हमारे पड़ोस की मीना आंटी की बेटी सुधा कल ही इंदौर स्थित किसी आध्यात्मिक हॉस्टल से आई है। उसको देखकर तो मैं आश्चर्यचकित हो गई। इतनी चंचल, इतनी फैशनेबल लड़की कैसी शांत और सौम्य नज़र आई। उसके चेहरे के तेज के तो क्या कहने। मैं तो उसे पहचान ही नहीं पाई।

रूही - क्या कह रही हो?

मन्नत - हाँ, बिल्कुल। पूरी बदल गई है वो। मुझे तो लगा कि यह सुधा ही है या कोई और है।

रूही - अच्छा मन्नत, मुझे मिलवा दो ना उससे।

मन्नत - क्यों नहीं। अभी चलो।

(रूही, मन्नत और सौम्या तीनों सुधा से मिलने जाती हैं)

सुधा - ओमशांति।

मन्नत - ओ सुधा, तुम तो एक साल में कितनी बदल गई हो। इतनी एडवांस और फैशनेबल लड़की इतनी सिम्पल हो गई है? इट्स अनबिलिवेबल!

सुधा - वास्तव में मन्नत, हमारे हॉस्टल में शारीरिक सौन्दर्य से ज्यादा आंतरिक सौन्दर्य को बढ़ाने की मेहनत करवाई जाती है। यह बाह्य शृंगार क्या बड़ी बात है, यह तो हर कोई कर सकता है लेकिन हमको सिखाया जाता है कि विचारों की ऊँचाई और दिव्य गुणों की धारणा ही सही मायने में हमारे जीवन के सच्चे शृंगार हैं। और यही हमें जीवन के सही लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं।

सौम्या - Wow interesting! तुम्हारे हॉस्टल की सबसे अच्छी बात क्या है?

सुधा - आपको पता है, यह हॉस्टल दुनिया के तमाम हॉस्टल्स से एकदम अलग है, एक्सक्लुसिव है। इस हॉस्टल की सबसे खास बात यह है कि यहाँ हमें अपनी बुरी से बुरी आदतों को जड़ से उखाड़ फेंकने की शक्ति और युक्ति मिलती है। मैं कितनी गुस्सैल स्वभाव की थी। मन्नत आपको याद है ना जब मुझे गुस्सा आता था तो मैं कैसे पूरे घर को

सिर पर उठा लेती थी लेकिन हॉस्टल में मैंने विनम्रता सीखी, अपने आवेश को आसानी से नियंत्रित करना सीखा। मैं पहले आग थी आग। तुम्हें ताज्जुब होगा कि अब मैं खुद जैसे कि फायर ब्रिगेड हो गई हूँ। (सब हँसते हैं)

रूही - परंतु यह कैसे संभव है?

सुधा - रोज योगाभ्यास और ज्ञान श्रवण से धीरे-धीरे मुझमें समझ आती गई। मेरा दृष्टिकोण स्वयं के प्रति और अन्य लोगों के प्रति सकारात्मक बनता गया।

रूही- अच्छा सुधा, और वहाँ क्या-क्या सीखा।

सुधा - हॉस्टल के अति शुद्ध, पवित्र व आत्मीय वातावरण में रहकर मेरा भटकता चंचल मन शांत, परिपक्व, गंभीर, अनुशासित व समझदार बन गया। बुद्धि में स्थिरता आई, विवेक जगा, नियमितता से पुरुषार्थ करने की कला सीखी। आंतरिक शक्तियों को अर्जित किया, उनका मूल्य समझा।

मन्नत - क्या खूब, कितना परिवर्तन आया।

सुधा - और मैं अपने इसी स्वपरिवर्तन से एक ठोस लक्ष्य को पकड़ पाने में कामयाब हुई। अब तो मेरा एक ही शुभ संकल्प है कि जो परिवर्तन मुझमें आया है, जैसे मुझे ज़िंदगी की नई राह मिली है वैसे ही मैं औरों के जीवन को श्रेष्ठ बनाने में, उन्हें नई दिशा देने में सहायक बन सकूँ, तभी मेरा जीवन सार्थक हो सकेगा।

रूही - कितना सुन्दर! थोड़ा और बताओ ना वहाँ की दिनचर्या के बारे में? वहाँ और क्या-क्या सिखाया जाता है?

सुधा - हॉस्टल में प्रतिदिन कन्याएँ प्रातःकाल उठकर राजयोग का अभ्यास व आध्यात्मिक ज्ञान का श्रवण करती हैं। इसके पश्चात् लौकिक पढ़ाई के लिए शहर के विभिन्न अत्याधुनिक शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन करने जाती हैं। विभिन्न कलाएँ जैसे गायन, वादन, लेखन, भाषण, सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, साफ-सफाई, गृहसज्जा, पाककला आदि का प्रशिक्षण भी लेती हैं।

रूही - अच्छा सुधा, क्या हम भी आपके हॉस्टल में प्रवेश पा सकते हैं?

सुधा - हाँ, क्यों नहीं, लेकिन इसके लिए आपको सात दिन का कोर्स जो ब्रह्माकुमारी आश्रम द्वारा दिया जाता है, लेना पड़ेगा और वहाँ बताये गये नियमों की धारणा भी शुरू करनी पड़ेगी।

रूही - तब तो मैं आज ही राजयोग कोर्स प्रारंभ कर लेती हूँ। थैंक्स सुधा, तुम तो मेरे लिए सचमुच एक फरिश्ता हो। तुमने कितनी अच्छी बात बताई जो मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी। इसकी तो मुझे कब से तलाश थी। ऐसा लगता है, भगवान ने तुम्हें मेरे लिए ही भेजा है। लेकिन सुधा, वहाँ पर प्रवेश की विधि क्या है?

सुधा - छात्रावास में नई कन्याओं के

प्रवेश हेतु जनवरी से अप्रैल माह तक संपर्क कर सकते हैं। प्रवेश की प्रक्रिया अप्रैल माह में प्रारंभ हो जाती है। अधिक जानकारी के लिए कागज़ कलम लो और नोट करो ये पता:-

बी.के. करूणा, 'शक्ति निकेतन'
ओमशांति भवन, ज्ञान शिखर,
गेट नं. 2, 33/4, न्यू पलासिया,
इंदौर (म.प्र.) 452001
फोन नं. 0731-2531631

मो.9425316843, 8989600088

फैक्स - 0731-2430444

ईमेल- shaktiniketan@gmail.com



राजयोग से असाध्य रोग पर विजय

ब्रह्माकुमार गौतम, रजनांदगांव (छ.ग.)

बात आज से 10 वर्ष पहले की है जब मुझे पहली बार मिर्गी का दौरा पड़ा। बाद में यह दौरा बढ़ता ही गया। स्थिति ऐसी हो गई कि एक दिन में दौरे के दो-चार झटके आने लगे और बाद में फिर पाँच-छह झटके आने लगे जिनमें से कुछ तो सामान्य और कुछ विकराल रूप के होते थे जिस कारण जीवन में अंधकार नज़र आने लगा। डॉक्टरी इलाज भी करवाया पर विशेष लाभ नहीं हुआ। हर वक्त दवाई अपने पास रखकर चलता था। एकांत में कई बार तो भगवान के पास जाकर रोता भी था।

तभी एक दिन पड़ोस की एक बहन, जोकि ब्रह्माकुमारी आश्रम में प्रतिदिन जाती है, के कहने पर मैं स्थानीय ब्रह्माकुमारी आश्रम गया। वहाँ आध्यात्मिक प्रवचन सुनने को मिला जिससे मुझे संतुष्टता व कुछ प्राप्ति का अहसास हुआ। क्या प्राप्त हुआ, उसे शब्दों में बयान नहीं कर पा रहा हूँ। दो दिन

बाद मैं वहाँ फिर गया, ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा म्यूज़ियम समझा, बहुत अच्छा लगा और फिर सात दिन का नियमित कोर्स भी किया। कोर्स के अंतिम दिन राजयोग का अभ्यास कराया गया। यह शिवबाबा के स्नेह का प्रतिफल है जो मुझे राजयोग के अभ्यास में विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ी और सहज ही बाबा से दिव्य अनुभव होने लगे, मैं बाबा से सकाश लेता रहा। राजयोग के अभ्यास से कब मिर्गी का दौरा कम होने लगा, मुझे पता ही नहीं चला। धीरे-धीरे दवाई की जगह बाबा और बाबा का प्यार याद रहने लगा। अब राजयोग ही मेरी दवाई है और अब खुद को इस रोग से 95 प्रतिशत मुक्त महसूस करता हूँ। अब तो दिल कहे, बाबा तेरा शुक्रिया!

इस लेख के माध्यम से यही संदेश अपने भाई-बहनों को देना चाहता हूँ कि राजयोग तन तथा मन दोनों का इलाज करता है। यदि लाख टके की दवा लेनी है तो अपने निकटतम ब्रह्माकुमारी आश्रम में अवश्य पधारें और मेरे समान जीवन को सुखमय बनायें। ❖

राजयोग ही कर्मयोग है

● ब्रह्माकुमारी पुष्पा, दिल्ली (पांडव भवन)

मानव जीवन दो सत्ताओं से मिलकर बना है। एक है चेतन सत्ता आत्मा जिसमें विचार करने, निर्णय करने की शक्ति है और दूसरी सत्ता है शरीर जो कि पाँच तत्वों से बना है जिसमें ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ हैं जिनके माध्यम से ही आत्मा कर्म करती है। आत्मा के बिना शरीर का कोई महत्व नहीं और शरीर के बिना आत्मा साकार में नहीं आ सकती। इसलिए दोनों सत्ताओं का संपन्न होना जरूरी है। कहा भी जाता है, Healthy mind has a healthy body & healthy body has a healthy mind. अगर शरीर ठीक नहीं तो मन परेशान रहता है। अगर मन परेशान है तो शरीर बीमार हो जाता है। इन दोनों को ठीक रखने की विधि है योग। शरीर के लिए योग है शारीरिक क्रियाएँ लेकिन मन के स्वास्थ्य के लिए चाहिए मन की एकाग्रता और मन का सर्वोच्च सत्ता सर्वशक्तित्वान परमपिता परमात्मा से मिलन जिसे राजयोग कहते हैं।

योग: कर्मसु कौशलम्

जब हम परमात्मा पिता की याद में टिककर कर्म करते हैं तो वे कार्य श्रेष्ठ होते हैं जिनके फलस्वरूप ही सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है। कहा

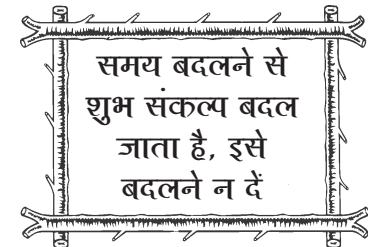
भी गया है, योग: कर्मसु कौशलम् अर्थात् योग से ही कर्म कुशल होते हैं लेकिन कई लोग इसका अर्थ इस प्रकार लेते हैं कि किसी कार्य में मास्टरी होना ही योग है। जैसे कि कोई कुम्हार बहुत ही कुशलतापूर्वक मिट्टी का कुंभ बना रहा हो तो उसकी यह कुशलता योग ही है। वास्तव में यह अर्थ लगाना ठीक नहीं है क्योंकि यदि कोई जेबकतरा जेब काटने की कला में कुशल हो गया तो वह भी योगी ठहरा। वास्तव में इस सूत्र का सही अर्थ यह है कि सच्चा योग अर्थात् वह कुशलता जिससे किये जाने वाले कर्म श्रेष्ठ हों, विकर्म न हों इसलिए भगवान ने कहा, तुम कर्मयोगी बनो अर्थात् कर्म भी करो और योग भी करो क्योंकि जब मनुष्य योग (परमात्मा पिता की प्रेम भरी स्मृति) में टिककर कर्म करता है तो उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहता है।

अनिवार्य है कर्म से पहले

स्थिति की जाँच

कर्म करने से पहले मनुष्य को देख लेना चाहिए कि उसकी आंतरिक अवस्था कैसी है, चिंतन कैसा चल रहा है, हर्ष, उल्लास और आनन्द है या नहीं। जैसे हवाई जहाज को उड़ाने से पहले उसकी जाँच-पड़ताल की

जाती है ताकि हादसा ना हो जाये। रेलगाड़ी के चलने से पहले भी उसकी पड़ताल की जाती है। उसके हर डिब्बे के नीचे मिस्री जाकर, हर पहिए को हथौड़े से बजाकर देखता है कि उसमें टूटे हुए होने की आवाज़ तो नहीं आती। इसी प्रकार हमें भी देख लेना चाहिए कि शरीर रूपी गाड़ी चलाने से पहले हमारी स्थिति ठीक है। हवाई जहाज चालकों की डॉक्टरी परीक्षा होती है कि कहीं उन्होंने शराब तो नहीं पी हुई। इसी प्रकार यह देखना भी अनिवार्य है कि मनुष्य का ज्ञान-चक्षु ठीक काम कर रहा है, उसका मन काम या मोह के नशे में तो नहीं है। यदि ऐसा होगा तो किसी अन्य मनुष्य के साथ स्वभाव टकराने से दुर्घटना हो सकती है। इसीलिए योगयुक्त स्थिति चाहिए। आनन्द की स्थिति चाहिए। इसमें रहने से स्वयं को तो तनाव होगा ही नहीं, दूसरों को भी हमसे शान्ति मिलेगी, लेकिन यह तब ही संभव है जबकि हम परमात्मा के साथ आत्मा का संबंध मन के द्वारा बनाकर रखेंगे और कर्मेन्द्रियों को संयम में रखेंगे।



ज्ञानामृत की 'ज्ञान दान योजना' के अंतर्गत 'वरदानी', 'महादानी' तथा 'दानी' टाइटल प्राप्त करने वाले बहन-भाइयों के नाम

वरदानी

राजेन्द्र- माउंट आबू (ग्लोबल) (1000)
सुभाष- असंध (400)
फशीनाथ पारी- धुले (351)
हरनाम- बैजनाथ (265)
मनमोहन काबरा- लातूर (211)
प्रभाकर उदगिरकर- लातूर (205)
कान्ति पटेल- शान्तिवन (201)
डॉ.पी.आर.गुप्ता- जयपुर (200)
रामफल- नई दिल्ली (200)
हुकमचंद अग्रवाल- ओबरा (200)

महादानी

भानु प्रताप सिंह- लखनऊ (150)
रामसिंह- गुरसहायगंज (150)
सुमन- फतेहगढ़ (138)
श्रीकला- बरवाला (135)
कंचन- भिकियासेन (135)
शरणिमा- बधापुर (128)
ज्योति- अहमदाबाद (115)
मोहन ट्रंकवाले- बरवाला (115)
शकुंतला- फैजपुर (114)
सम्पा- कुचीबिहार (110)
वंदना- जयपुर बनी पार्क (108)
वंदना- जयपुर बनी पार्क (108)
अनील गुप्ता- लखनऊ (108)
प्रेरणा रेड्डी- लातूर (106)
रामलिंग गावले- लातूर (101)
सोपन कोडरे- लातूर (101)
पंचुलाल- टोंक (100)
रमेश जावर- अम्बड (100)
ओमप्रकाश- समस्तीपुर (100)

गोरा- पानीपत (100)
दयानंद- भवानी खेरता (100)
कमला- लातूर (100)
दानी
नूतन कुमारी- सुलतानगंज (82)
बलवीर- चरखी दादरी (80)
सुनीता पारी- धुले देवपुर (75)
मीना निकम- धुले देवपुर (75)
महेश- बदनावर (75)
गोपाल- ओबरा (राबर्टसगंज) (72)
राजमल गुर्जन- बूंदी (71)
मंजू- ठाणे पश्चिम (70)
लखन चौधरी- सरायपाली रायपुर (62)
ज्योति- नरकटिया (60)
कमलेश ठाकुर- सुन्दरनगर (60)
वीना मुंजल- बरवाला (60)
मीरा- अम्बड (60)
रश्मि- जयपुर मुरलीपुरा (60)
विक्रम- मोठ (60)
चंद्रभान भाटिया- ओबरा (57)
गोपाल- अम्बाजोगाई (57)
चंदु- पुसद (55)
माखनलाल- दिल्ली गाजीपुर (55)
नितिन- पूणे (55)
प्रकाश सोंजी- लातूर (55)
रवि हिंगाने- लातूर (53)
उर्मिला बहन- शान्तिवन (52)
ऊषा चौहान- इंदौर (52)
देवशाल- पुसाद (52)
पारसराम- सरायपाली रायपुर (52)
अमित- कोटा (52)
ईश्वरी- हेलीमण्डी (51)

दादासाहब दारफालकर- लातूर (51)
ललिता मालवीय- इंदौर (50)
महेशचंद्र शिवहरे- ग्वालियर (50)
अजीत सैनी- सफीदों (50)
पी.एस.राना- आगरा (50)
रामेश्वर दयाल- आगरा (50)
पुष्पा रानी- आगरा (50)
दयाराम- दिल्ली गाजीपुर (50)
शिवजी- दिल्ली गाजीपुर (50)
ओमप्रकाश मनचंदा- बरवाला (50)
विजय- गजरौला (50)
रमेश पी.नायक- वापी (50)
निशा- रानिया (50)
राधाश्याम- रानिया (50)
मीरा- मोहम्मदाबाद (50)
सुरेश रामनानी- भोपाल (50)
मलन गलांडे- पूना वडगांवशेरी (50)
नारायण चौधरी- पूना वडगांवशेरी (50)
रामकिशन- सवाई माधोपुर (50)
राजेश- मोठ (50)
सुभाष- मोठ (50)
किरण- मोठ (50)
रमेश- भवानी खेरता (50)
निशा चक्रवर्ती- रानिया (50)
राधेश्याम- रानिया (50)
धरमी- चरखी दादरी (50)
रविन्द्र क्षीरसागर- लातूर (50)
प्रभु सावलगी- लातूर (52)
भगवत नालये- लातूर (50)
भारती सांगवे- लातूर (50)
विमल चलवाडे- लातूर (50)
करण सिंह- कुरुक्षेत्र (50)
सुरेश- कुरुक्षेत्र (50)